



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 3, 2012/श्रावण 12, 1934

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 3, 2012/SHRAVANA 12, 1934

सं. 176।

No. 176।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 2 अगस्त, 2012

विषय : चीन जन. गण. और थाइलैंड के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित “बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16” से अधिक के सामान्य रिम ब्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल ब्यास टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स” के आयातों के बारे में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा—अंतिम जांच परिणाम।

क. पृष्ठभूमि :

सं. 15/35/2010-डीजीएडी.—यतः समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटिवस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए चीन जन. गण. और थाइलैंड (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहाँ से निर्यातित “बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16” से अधिक के सामान्य रिम ब्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स” (जिन्हें आगे ल्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स” के आयात पर 29 जून, 2007 की अधिसूचना फा. सं. 14/09/2005-डी जी ए डी के तहत मूल रूप में निश्चयात्मक संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात पर 29 जून, 2007 की अधिसूचना की गई थी।

2. और यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) द्वारा शुरू की गई मध्यावधि समीक्षा के उपरांत प्राधिकारी ने 26 अगस्त, 2010 की अपनी अधिसूचना सं. 15/1/2009-डीजीएडी के तहत निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने और उसमें संशोधन करने की सिफारिश की थी और यतः केंद्र सरकार ने 18 नवम्बर, 2010 को अपनी अधिसूचना सं. 117/2010-सी.शु. जारी की थी।

3. यतः ऑटोमोटिव टायर मैन्यु एसो. (ए टी एम ए) ने मै. अपोलो टायर लि., मै. जे. के. टायर इंड. लि., लिएट लि. तथा मै. एम आर एफ लि. द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए घरेलू उद्योग की ओर से अधिनियम और पाटनरोधी नियमों के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहाँ से एक लि. द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए घरेलू उद्योग की ओर से अधिनियम और पाटनरोधी नियमों के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन का आवेदन दायर किया है और पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे जारी रखने का अनुरोध किया है।

4. घरेलू उद्योग की ओर से दायर विधिवत पुष्टिकृत आवेदन को ध्यान में रखते हुए और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क (5) के अनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल की या वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के बारे में लागू शुल्क को निरंतर जारी रखने की ज़रूरत की समीक्षा करने और इस बात की जांच करने कि क्या ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, के लिए 3 अगस्त, 2011 को एक निर्णायक समीक्षा जांच शुरू की।

ख. प्रक्रिया

5. इन कार्रवाइयों में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- i. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था ।
- ii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 3 अगस्त, 2011 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, उसके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग को भेजी । इस जांच से संबंधित पक्षकारों से प्रश्नावली का उत्तर दायर करने और निर्धारित समय सीमा के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावलियों की प्रतियां ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ संबद्ध देशों के दूतावासों को भी इस अनुरोध के साथ भेजी गई थी कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए संबद्ध देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें ।
- iii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :

क्र. सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. विंगड़ाओ रबड़ (ग्रुप) कंपनी, लि.
2.	मै. शंधाई टायर एंड रबड़ कंपनी,
3.	मै. एओलस टायर कंपनी लि.,
4.	मै. विंगड़ाओ मोनोलिथ ओ टी आर टायर कंपनी लि.,
5.	मै. योकोहामा टायर मैन्युफ्यूक्चरिंग (थाइलैंड) कंपनी,
6.	मै. थाई बिजस्टोन कंपनी लि.,
7.	मै. ओटानी टायर कंपनी लि.,
8.	मै. मिकेलिन सियाम कंपनी लि.,

इसके उत्तर में मै. हेंगझोऊ झोग्सी रबड़ कं.लि, जो चन जन.गण. के एक उत्पादक/निर्यातक है, ने प्रश्नावल का उत्तर दायर किया है ।

मै. याकोहामा टायर मैन्यु. (थाइलैंड) कं. लि., थाइलैंड ने यह बताया है कि उसने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है ।

iv. आवश्यक सूचना मांगने हेतु भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों, आयातकों, प्रयोक्ताओं और एसोसिएशनों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. रेडियल्स इंटरनेशनल,
2.	मै. करतार टायर हाउस,
3.	मै. काक्स एंड बिल्स प्रा.लि.,
4.	मै. राणा टायर्स,
5.	मै. सनी इंटरनेशनल,
6.	मै. अमन इंटरनेशनल,
7.	मै. विकास रोड कैरियर्स लि., भरुच,
8	मै. एए इम्पैक्स, कोयम्बटूर,
9.	मै. अपोलो टायर्स लि.
10.	मै. एम आर एफ लि.
11.	सिएट लि.
12.	मै. जे. के. टायर्स एंड इंडस्ट्रीज
13.	मै. बालकृष्णा इंडस्ट्रीज लि.
14.	मै. मल्होत्रा रबर्स लि.
15.	मै. टायर्स कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
16.	मै. डनलप टायर्स
17.	मै. वियरवैल टायर्स एंड ट्यूब्स प्रा. लि.
.18.	मै. मोदी टायर्स कं. प्रा. लि.
19.	मै. बिरला टायर्स शिवम चैम्बर्स
20.	मै. ब्रिजस्टोन इंडिया प्रा. लि.
21.	मै. गुडईयर इंडिया लि.
22.	मै. फालकॉन टायर्स लि.

क्र.सं.	एसोसिएशन/कंपनी का नाम
1.	ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस
2.	सोसायटी ऑफ इंडिया आटोमोबाइल्स मैन्युफैक्चरर्स

v. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित हितबद्ध पक्षकारों ने उत्तर दायर किया है :

1. ऑल इंडिया कॉन्फेरेंशन ऑफ गुड्स, व्हीकल ऑनर्स एसोसिएशन,
नई दिल्ली 5110005
2. ऑल इंडिया टायर्स डीलर्स फेडरेशन, दिल्ली
3. ऑटोमेटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स लि., सिएट लि. एंड एम आर एफ लि
4. फॉल्कॉन टायर्स लि., मैसूर
- vi. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जांच अवधि और पूर्ववर्ती तीन वर्षों के लिए आयात के आंकड़े मांगे गए थे।
- vii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा, जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षणार्थ खुला रखा।
- viii. प्राधिकारी ने हुई क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का विश्लेषण करने और उत्पादन लागत, भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ix. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने समस्त हितबद्ध पक्षकारों को 5 मई, 2012 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान किया। सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार व्यक्त करने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त उत्तरों पर दिए गए तर्कों पर इस जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।
- x. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 (12 माह) है। तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 की अवधि तथा उत्पादक अवधि शामिल है।
- xi. घरेलू छपादकों और चीन जन.गण के सहयोगी निर्यातक/उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना एवं आंकड़ों के संबंध में आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया था।
- xii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार वर्तमान जांच में प्राधिकारी के समक्ष विचाराधीन अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया है। प्रकटन विवरण पर प्राप्ति टिप्पणियों पर सांव सीमा तक इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- xiii. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है, जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।

xiv. जहां कहीं किसी हितबद्ध पक्षकार ने सूचना जुटाने से मना किया है अथवा वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान आवश्यक सूचना को अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर यह जांच परिणाम दर्ज किया है।

xv. *** चिन्ह इस विवरण में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ग. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण के बाद किए गए अनुरोध और उनकी जांच मै. हेंगझोऊ झोंगसी रबड़ कंपनी लि.

6. प्रकटन विवरण के उत्तर में मै. हेंगझोऊ झोंगसी रबड़ कंपनी लि., चीन जन.गण. द्वारा संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए गए हैं :

- प्राधिकारी ने क्षति के बारे में निर्यातक के अनुरोधों का तथ्यपरक निर्धारण नहीं किया है।
- इसने घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन को तरजीह दी है और यह बताया है कि ट्रक और बस टायरों से प्राप्त राजस्व कुल बिक्री कारोबार का 60-70% बनता है। जो के टायर्स का राजस्व योगदान ट्रक और बस टायर खंड से प्राप्त योगदान की तुलना में अधिक है। घरेलू उद्योग के 50% से अधिक का राजस्व केवल ट्रक/बस बायस टायरों से प्राप्त होता है।
- सामान्य मूल्य की गणना में प्राधिकारी ने इस बारे में नहीं बताया है कि जांच अवधि के दौरान कौन सी कीमत, औसत कीमत ली गई है अथवा निर्यातों की अवधि के दौरान प्रचलित कीमत क्या थी।
- क्षति रहित कीमत की गणना हेतु घरेलू उद्योग ने निवेश पर 22% की आय की मांग की है। किन्तु उद्योग अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और जर्मनी के शीर्षस्थ टायर विनिर्माताओं और विश्व के चौथे सबसे बड़ी टायर विनिर्माता कंपनी की आय की दरें लगभग 11% हैं।
- प्राधिकारी ने यह स्वीकार किया है कि चीन जन.गण. से हुए आयात वर्ष 2007-08 में 10770 से घटकर जांच अवधि में 2171 हो गए हैं परंतु घरेलू उद्योग अपना उत्पादन और बिक्री वर्ष 2007-08 में 558836 मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 571051 मी.ट. करने और बिक्री को 2007-08 में 499477 मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में 526854 मी.ट. करने में सफल रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि आयातों में कमी आ रही है और घरेलू उद्योग अपना उत्पादन और बिक्री बढ़ाने में सक्षम रहा है और कोई मात्रात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।
- कम कीमत पर बिक्री प्राधिकारी द्वारा परिकल्पित निवेश पर आय की अत्यधिक दर के कारण हुई है।
- प्राधिकारी ने एक ओर उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन के कारण क्षमता उपयोग में परिवर्तन को स्वीकार किया है और दूसरी ओर यह बताया है कि सतत पाटन के कारण उत्पादन, क्षमता

उपयोग और बिक्री मात्रा में वृद्धि में रुकावट आई है और इस प्रकार इस बारे में की गई ऐसी जांच गलत है।

- प्राधिकारी ने लाभप्रदता के भाषदंडों में इतनी तीव्र गिरावट के कारणों की जांच नहीं की है। यह भी उल्लेख नहीं किया गया है कि तेजी से आई ऐसी गिरावट आरोपित पाटन के कारण आई है।
- घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और संबद्ध वस्तु के आयात के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। घरेलू उद्योग को हुई कोई भी क्षति पाटन से इतर कारणों के कारण हुई है।
- प्राधिकारी ने इस बात की जांच नहीं की है कि घरेलू उद्योग कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि के परिणामस्वरूप अपनी कीमत बढ़ाने में विफल क्यों रहा है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, हमने इसके कारण पहले ही प्रस्तुत कर दिए हैं परंतु प्राधिकारी ने इनकी जांच नहीं की है। घरेलू उद्योग अत्यधिक प्रतिस्पर्धी घरेलू बाजार के कारण अपनी बिक्री कीमत को बढ़ाने में विफल रहा है न कि आरोपित पाटन के कारण।
- प्राधिकारी ने मालसूची में परिवर्तन के कारणों की जांच नहीं की है। मालसूची की तुलना केवल बिक्री के संबंध में की जानी चाहिए।
- प्राधिकारी ने यह माना है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में गिरावट आई है; इसके विपरीत आधार वर्ष की तुलना में जांच अधिक के दौरान घरेलू उद्योग की प्रति दिन उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृति होने की संभावना

- बेशी क्षमताओं से संबंधित साक्ष्य अर्थात् यूरोपीय रबड़ जर्नल की वैश्विक टायर रिपोर्ट अगोपनीय रूपांतरण में प्रस्तुत नहीं की गई है; इसलिए इसकी अनदेखी करना जरूरी है।
- घरेलू उद्योग का यह तर्क निराधार है कि चीन की सरकार ने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु के विनिर्माण पर प्रतिबंध लगाया है।
- प्राधिकारी द्वारा उल्लिखित अत्यधिक आयातों का निर्धारण संबद्ध वस्तु के उत्पादन/बिक्री की मात्रा तथा मांग की तुलना में करने की जरूरत है।
- चीन से हुए आयातों का घरेलू उद्योग की लाभप्रदता से कोई संबंध नहीं है।
- घरेलू उद्योग ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि लाभप्रदता में घट-बढ़ कच्ची सामग्री की कीमत में उतार-चढ़ाव के कारण हुई है तथा लाभ में गिरावट प्राकृतिक रबड़ एवं अन्य निविष्टियों की कीमत में तेजी से हुई वृद्धि के कारण आई है। और निविष्टि की कीमत में वृद्धि इतनी अधिक थी जिसे पूर्ण रूप से उपभोक्ताओं पर नहीं डाला जा सकता था। अतः प्राधिकारी द्वारा इस संबंध में की गई यह जांच गलत है कि घरेलू उद्योग को लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण सतत वास्तविक क्षति हुई है।

- पाटन की मौजूदगी पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करने की पर्याप्त शर्त नहीं है, पाटन पर तब तक कार्रवाई नहीं की जा सकती जब तक कि उससे घरेलू उद्योग को क्षति न हो रही हो। डी जी ए डी द्वारा उपर्युक्त कारकों की तथ्यपरक जांच संभावना के विश्लेषण के साथ किए जाने की जरूरत है।
- इटली से एकेलिक फाइबर के मामले में डी जी ए डी ने यह जांच परिणाम निकालने के बावजूद पाटनरोधी शुल्कसमाप्त करने की सिफारिश की थी कि इटली से पाटन में तेजी आ रही है। इस मामले में भी यही स्थिति विद्यमान है। जहां सभी मापदंडों से निष्पादन में अत्यधिक सुधार का पता चलता है, घरेलू उद्योग अपने इस दावे का समर्थन नहीं कर सकता है कि संबद्ध देशों के पास बेशी क्षमताएँ हैं।

कारणात्मक संबंध :

- अन्य देशों से संबद्ध वस्तु की कीमत में अंतर मुख्यतः यूरोपीय आपूर्तिकर्ताओं से आयातित अच्छी क्वालिटी के कारण है।
- बायस टायरों की अपेक्षा रेडिएशन की भाँग में भारी वृद्धि हुई है और इसका अनुमान घरेलू उद्योग को भी नहीं था।
- जहां तक खपत की पद्धति में परिवर्तन के मुद्दे का संबंध है, यह तर्क दिया गया था कि घरेलू कंपनियों की रिपोर्टों में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया गया है कि रेडिएलाइजेशन में तेजी से वृद्धि हो रही है और इस प्रकार बॉयस टायरों की क्षमता भारत में बेशी बन रही है।
- घरेलू उद्योग अंतर्राष्ट्रीय प्रतिरप्द्धा को समाप्त कर एकाधिकार की स्थिति उत्पन्न करना चाहता है। यदि पाटनरोधी शुल्क पुनः जारी रखा जाता है तो ग्राहक के पास घरेलू उत्पादकों के कार्टेल द्वारा निर्देशित कीमत पर संबद्ध वस्तु की खरीद करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहेगा।
- टायरों में बायस टायरों के स्थान पर रेडियल प्रौद्योगिकी का तेजी से उपयोग हो रहा है। सभी कंपनियां केवल रेडियल टायरों में भारी निवेश कर रही हैं। रेडियल टायरों में विकास बायस टायरों की तुलना में काफी अधिक हुआ है। इस संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोधों पर प्राधिकारी ने विचार नहीं किया है।

घरेलू उद्योग

7. प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग द्वारा संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए गए।

- ए आई टी डी एफ नियम 2(घ) के अनुसार हितबद्ध पक्षकार की परिभाषा में नहीं आता है। ए आई टी डी एफ ने अपने प्रतिनिधित्व के बारे में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है।
- इसने अनुरोध किया है कि पाटनरोधी शुल्क उसकी निर्धारित मात्रा (शुल्क के निर्धारित स्वरूप) के रूप में ही लगाया जाए।

- घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि शुल्क केवल अम.डॉ. के रूप में लगाया जाना चाहिए ।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जने के बाद विचाराधीन उत्पाद के आयातों में गिरावट आई है । तथापि, आयातों की मात्रा अभी भी इतनी अधिक है कि जिससे संभावित कीमतों की पुष्टि होती है और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन एवं क्षति होने की संभावना का पता चलता है ।
- लागू पाटनरोधी शुल्क में वृद्धि किए बिना आयातों से कीमत में भारी कटौती हो रही है । अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से आयात की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है ।
- उद्योग उसके बाद ऐसी सत्यापित सूचना के आधार पर इस आशय के निष्कर्ष पर पहुंचा है । याचिका में किए गए दावों और सार्वजनिक विवरणों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है । तथापि, वार्षिक रिपोर्ट (क) सभी उत्पादों (ख) सभी बाजारों (ग) लेखा वर्ष के लिए कंपनियों के व्यापारिक प्रचालनों से संबंधित है । इसके विपरीत प्राधिकारी को प्रदत्त सूचना (क) विचाराधीन उत्पाद के बारे में घरेलू उद्योग के बारे में दायर सूचना का निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सत्यापन किया है । (ख) केवल घरेलू बाजार (ग) जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्षों से संबंधित है । अतः यह आरोप तथ्यरहित है ।

संदर्भ शुल्क

- यह भी तर्क दिया गया है कि संदर्भ कीमत शुल्क लागू किया जाए क्योंकि इससे घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, की भरपाई हो जाएगी ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की निम्नानुसार और इस जांच परिणाम के संगत खंडों में जांच की गई है ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्राधिकारी ने क्षति के बारे में निर्यातक के अनुरोधों की तथ्यपरक जांच नहीं की है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने इस जांच से संगत पाए गए और निर्यातक द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों की पर्याप्त जांच की है और उनका निवारण किया है ।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने इस जांच में सहयोग नहीं किया है । अतः वह वर्ल्ड ट्रेड एटलस में उपलब्ध अंकड़ों के अनुसार जांच अवधि के लिए प्राकृतिक रबड़ तथा कार्बन ब्लैक जैसी प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए बाध्य हुए हैं । जहां तक अन्य सामग्रियों का संबंध है, चूंकि औसत अंतर्राष्ट्रीय कीमत असामान्य रूप से अधिक पाई गई थी इसलिए कुशल घरेलू उद्योग की दर को स्वीकार किया गया है । इसके अलावा, सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की खपत के कारक और परिवर्तन लागत को स्वीकार किया गया है तथा 5% के उचित लाभ मार्जिन पर विचार किया गया है ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि आयातों में कमी आ रही है और घरेलू उद्योग अपना उत्पादन और बिक्री बढ़ाने में समर्थ रहा है और उस पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और इसलिए प्राधिकारी को पाटन एवं क्षति जारी रहने और उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना पर विचार करना होता है। जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों की मात्रा तुलनात्मक रूप से कम परंतु काफी अधिक रही थी। इससे उस प्रवृत्ति का भी पता चलता है जिसके अनुसार पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में आयातों के बारे में सूचना मिलने की संभावना है। जांच से इस बात की पुष्टि हुई है कि संबद्ध देशों से आयात कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत, उत्पादन लागत और क्षति रहित कीमत से काफी कम थी। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को "क्षति" होने की संभावना है। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि यदि वह पाटित आयातों की कीमतों की बराबरी करता है तो उसे उत्पादन लागत से काफी कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। इसके अलावा, अत्यधिक निपटान योग्य उत्पादन क्षमताओं पर विचार करते हुए इस बात की संभावना है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में भारत में पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के अत्यधिक आयात होने की संभावना है।
- यह नोट किया जाता है कि चीन जन गण और थाइलैंड से भारत में संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से कम रही है जिसकी वजह से कम कीमत पर बिक्री हुई है।
- जहां तक क्षमता उपयोग में गिरावट का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि उत्पाद मिश्रण के कारण क्षमता उपयोग में कुछ परिवर्तन हो सकता है, तथापि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।
- लाभ में गिरावट के कारणों के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि लाभ में कुछ गिरावट स्पष्ट तौर पर कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि के कारण आई है परंतु यह भी देखा गया है कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही है जिससे संबद्ध वस्तु की कीमत में भी वृद्धि नहीं की जा सकती है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि पाटित आयातों की मौजूदगी से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- आगे यह नोट किया जाता है कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग का निष्पादन आगे और खराब होने की संभावना है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और संबद्ध वस्तु के आयात के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और प्राधिकारी के लिए पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का निर्धारण करना अपेक्षित होता है। जांच से यह पता चला है कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग का निष्पादन और खराब होगा क्योंकि जहां एक ओर अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री नोट की गई है वहीं संबद्ध देशों के पास मुक्त रूप से निपटान योग्य अत्यधिक उत्पादन क्षमताएं पाई गई हैं।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग घरेलू प्रतिस्पर्धा के मद्देनजर अपनी कीमत को बढ़ाने में समर्थ नहीं रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू प्रतिस्पर्धा एक सामान्य व्यापारिक परिदृश्य है और यह समूची क्षति अवधि के दौरान बनी रही है। इसके अलावा, आयातों की पहुंच कीनत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही थी। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में हर हालत में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाठित आयात कीमतों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी कीमतें कम किए जाने के कारण घरेलू उद्योग की स्थिति और अधिक खराब होगी।
- यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने यह नहीं माना है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में गिरावट आई है। अतः हितबद्ध पक्षकारों का अनुरोध निराधार है।
- जहां तक सार्वजनिक क्षेत्र में बेशी क्षमताओं के बारे में साक्ष्य उपलब्ध होने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने इस साक्ष्य का प्रकटन वस्तुतः अगोपनीय आधार पर किया है और इसकी प्रति सार्वजनिक फाइल में रखी गई है।
- यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की अत्यधिक क्षमताएं हैं। इसके अलावा, चीन जन.गण. के मामले में रेडिएलाइजेशन तेजी से बढ़ रहा है और सरकार ने घरेलू बाजार हेतु संबद्ध वस्तु के विनिर्माण पर स्पष्ट रूप से प्रतिबंध लगाया है (अधिरोहण संधि के अनुबंध 2-ख और 3-ख के अनुसार)।
- प्राधिकारी निर्यातिक के इस विचार से सहमत हैं कि केवल पाटन कार्रवाई योग्य नहीं है। तथापि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को "क्षति" जारी रहने की संभावना है।
- अन्य जांचों का हवाला दिए जाने के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्येक मामले के कुछ खास तथ्य होते हैं। वर्तमान मामले की तथ्यात्मक स्थिति से पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और क्षति जारी रहने की संभावना की पुष्टि होती है। उसके अलावा, हितबद्ध पक्षकारों ने यह नहीं दर्शाया है कि वर्तमान मामले की वास्तविक स्थिति उन मामलों के समान है जिनमें पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया गया है।
- जहां तक चीन जन गण और तीसरे देशों से आयातित उत्पाद की गुणवत्ता में अंतर का संबंध है, प्राधिकारी ने यह पाया है कि ऐसा कोई परिमाणात्मक दावा नहीं किया गया है कि तीसरे देशों और चीन से आपूर्त टायरों की गुणवत्ता में इतना अंतर है जिससे कीमत में अंतर को न्यायोचित ठहराया जा सके। बहरहाल हितबद्ध पक्षकार द्वारा गुणवत्ता में अंतर को प्रदर्शित करने के बाद समायोजन की मांग की जा सकती है।
- रेडिएलाइजेशन में बढ़ोत्तरी के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि रेडिएलाइजेशन में वृद्धि हो रही है, तथापि, रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य से यह पता चलता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में कोई खास गिरावट नहीं आई है।

- प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों ने स्वतः विरोधाभासी अनुरोध किए हैं । चूंकि उन्होंने एक और यह बताया है कि घरेलू उद्योग एकारिधिकार स्थापित कर रहा है वही उन्होंने यह तर्क दिया है कि आंतरिक प्रतिस्पर्धा के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता प्रभावित हुई है । अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के व्यवहार को समाप्त करना और उचित बाजार की स्थिति सुजित करना है ।
- जहाँ तक शुल्क के स्वरूप का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि शुल्क के स्वरूप की संदर्भ शुल्क के रूप में सिफारिश 29 जून, 2007 के अंतिम जांच परिणाम के तहत की गई मूल जांच में की गई थी । तथापि, किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में मामले के तथ्यों और उसके गुण-दोष पर विचार करते हुए शुल्क के स्वरूप को 26 अगस्त, 2010 के जांच परिणाम के तहत संशोधित कर निर्धारित रूप में कर दिया गया था । प्राधिकारी ने इस मामले के तथ्यों को नोट किया है और शुल्क के नियत स्वरूप में संशोधन करने के बारे में रिकॉर्ड में कोई उपयुक्त दस्तावेज नहीं पाया है जैसी कि मध्यावधि समीक्षा जांच में सिफारिश की गई थी और उन्होंने यह माना है कि वर्तमान मामले में भी शुल्क का नियत स्वरूप उचित रहेगा ।

घ. हितबद्ध पक्षकारों के विविध अनुरोध और उनकी जांच

ए आई टी डी एफ द्वारा किए गए अनुरोध

- ए आई टी डी एफ कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सी आई ए टी) के एक आजीवन सदस्य के रूप में पंजीकृत है । सी आई ए टी सबसे बड़ा और एकल नामांकन व्यापार समुदाय है । ए आई टी डी एफ का मुख्यालय दिल्ली में है और उसके कार्यों को ८ जोनों में विभाजित किया गया है । संयोजन, ए आई टी डी एफ का कार्यालय दिल्ली टायर डीलर्स के परिसर में स्थित केवल सचिवालय के रूप में कार्य करता है और भुज्यालय रत्न पर उसके वित्तपोषण और अन्य सहायता को दिल्ली टायर्स डीलर्स एसो. द्वारा वहन किया जाता है जबकि आंचलित शाखाएं स्वयं अपने व्यय की पूर्ति करती हैं ।
- प्राधिकारी निर्णायक मामले से संबंधित सूचना जुटाने के लिए अपने अधिकारियों को बाजार में भेज सकते हैं और ए आई टी डी एफ तथा उसके संघटक पाटनरोधी प्राधिकारी को पूरी सहायता प्रदान करेंगे ।
- महानिदेशक-जांच, भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग (सी सी आई) ने 25 मई, 2011 की डी जी-सी सी आई रिपोर्ट के तहत आटोमोटिव टायर मैन्यु एसो. (ए टी एम ए) को प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002 की धारा 3(3) (क) तथा 3(3) (ख) का उल्लंघन करते हुए समन्वित रूप में कार्य कर कार्टल बनाने का दोषी पाया है ।
- रेडियल बस ट्रक टायरों के आयात संबंधी अपीलीय न्यायाधिकरण ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के जांच परिणामों को रद्द कर दिया है जिसके बाद वित्त मंत्रालय ने 9.2.2010 को अधिसूचना 2010/10 जारी की । इससे ए आई टी डी एफ के इस मत को बल मिलता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा ट्रक, बस टायरों के आयात पर अनुचित प्रतिबंध लगाया गया है । यह चीन जन.गण. और थाइलैंड से नॉन रेडियल ट्रक और बस टायरों के आयात की निर्णायक समीक्षा पर भी लागू होता है । ए आई टी डी एफ ने यह चुनौती दी है कि चीन जन.गण. से यात्री कार टायरों के आयात पर रक्षोपाय शुल्क लगाने की मंशा रखने वाले ए टी एम ए

और उसके सदस्यों की मांग अनुचित, अव्यवहारिक तथा अस्वीकार्य है क्योंकि इससे घरेलू उद्योग को किसी भी प्रकार की, किसी भी रूप में कोई क्षति नहीं हो रही थी । महानिदेशक, रक्षोपाय शुल्क ने 25 सितंबर, 2009 को घरेलू टायर उद्योग की दलील को रद्द कर दिया और उन्होंने रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया है । अतः यह सिद्ध हो जाता है कि ए टी एम ए और उसके सदस्य टायरों के आयात पर टैरिफ तथा गैर टैरिफ प्रतिबंधों की मांग करने के आदी हैं ।

- टैरिफ, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, जिसने ए आई टी डी एफ_ द्वारा घरेलू टायर उद्योग की कीमत संरचना और व्यवहार की जांच की थी, ने 19.11.2011 को इस बात की पुष्टि की कि ए आई टी डी एफ ने हमेशा घरेलू टायर उद्योग की किसी कार्यवाही और जांच के बारे में उसके प्रयास में समस्त एजेंसियों/विभागों/फोरम की मौखिक और लिखित सहायता की है । टैरिफ आयोग ने जनवरी, 2012 में टायर कीमत जांच के बारे में अपनी रिपोर्ट औद्योगिक नीति तथा संवर्धन विभाग को प्रस्तुत कर दी है और यह माना जाता है कि वर्ष 2005-06 से 2011-12 तक घरेलू टायर प्रतिस्पर्धियों द्वारा कीमत में की गई वृद्धि "असामान्य" थी ।
- ए आई टी डी एफ ने यह शिकायत की थी कि जांच अधिकारियों ने वर्ष 2006 और 2007 में जांच की शुरूआत के समय यह बताया था कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के इस मामले में टायर डीलरों का कोई दावा नहीं बनता है । यद्यपि ए आई टी डी एफ ने जांच अधिकारियों को बाजार में आमंत्रित किया और यह प्रदर्शित किया कि चीन जन.गण. से आयातित ट्रक/बस बायस प्लाई टायरों के बीच धागे की गहराई, समस्त व्यास पर की गई डिजाइन, न्यूनतम समग्र व्यास औस्त-अधिकतम समग्र व्यास के साथ-साथ मुख्यतः 10.00-2016 पी आर के समान आकार के घरेलू टायरों की तुलना में अंतर विद्यमान है । उनके समक्ष दोनों प्रकार के टायरों का प्रदर्शन किया गया था परंतु वे अंतिम रिपोर्ट में हमारे विचार दायर करने में विफल रहे जो जानबूझकर किया गया प्रतीत होता है । आयातित टायर और घरेलू टायर व्यवहारिक और संभावित रूप से "एपल एंड ऑरेंज हैं", घरेलू बिक्री की तुलना में आयात मात्रा नगण्य थी तब भी पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी ।

मै. हेंगझोऊ झाँगसी रबड कंपनी, लि. चीन. जन.गण.

9. मै. हेंगझोऊ झाँगसी रबड कंपनी, लि. चीन. जन.गण. ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

क. भारत में रेडियलाइजेशन का स्तर 10-20 प्रतिशत के बीच है और इसमें तेजी से वृद्धि हो रही है । रेडियल टायर बाजार द्वारा 35% का स्तर छू लेने की आशा है और वह बायस टायर बाजार का एक बड़ा हिस्सा हासिल करने की प्रक्रिया में है ।

ख. विभिन्न निर्णायक समीक्षा जांचों में प्राधिकारी ने विभिन्न आधारों पर शुल्क को समाप्त कर दिया है ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

10. घरेलू उद्योग के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :-

क. घरेलू उद्योग ने ए आई टी डी एफ की भागीदारी पर कड़ी आपत्ति की है। यह तर्क दिया गया है कि ए आई टी डी एफ नियम 2(घ) के अंतर्गत हितबद्ध पक्षकार की परिभाषा में नहीं आता है तथा आगे यह तर्क दिया है कि ए आई टी डी एफ को यह निर्देश दिया जाना चाहिए कि वह उसके अनुरोधों पर विचार किए जाने से पूर्व अपने प्रतिनिधित्व का विस्तृत साक्ष्य प्रदान करे। आगे यह उल्लेख किया गया है कि किसी सद्भावी हितबद्ध पक्षकार से इतर किसी अन्य पक्षकार को किसी हितबद्ध पक्षकार के रूप में अपने पूर्ववृत्त की पुष्टि किए बिना वर्तमान जांच में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। घरेलू उद्योग ने इस मामले के बारे में मूल जांच से उत्पन्न सेस्टेट के आदेशों का भी हवाला दिया है और यह अनुरोध किया है कि वर्तमान जांच में भाग लेने के लिए हितबद्ध पक्षकार से इतर किसी पक्षकार को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

ख. सूचना के प्रकटन के बारे में अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों का उत्तर देते हुए यह अनुरोध किया गया है कि उसने उस सीमा तक समस्त संगत सूचना का प्रकटन किया है जिस सीमा तक उसका सार्वजनिक रूप से प्रकटन किया गया है और और जो वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील नहीं है।

आगे यह तर्क दिया गया है कि :-

क. भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा की गई जांच के बारे में ए आई टी डी एफ के अनुरोध वर्तमान जांच के लिए अप्रासंगिक हैं।

ख. ए टी एम ए द्वारा ए आई टी डी एफ की भागीदारी के बारे में बार-बार आपत्तियां की जा रही हैं।

ग. महानिदेशक, रक्षोपाय द्वारा यात्री कार टायरों पर रक्षोपाय शुल्क समाप्त किए जाने के बारे में दिया गया तर्क वर्तमान जांच के लिए पूर्णतः असंगत है।

घ. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्णयिक समीक्षाओं में जारी किए गए ऐसे कई अंतिम जांच परिणाम हैं जिनमें निर्दिष्ट प्राधिकारी ने '(क) अत्यधिक कीमत कटौती, (ख) क्षति अवधि के दौरान हुए आयातों के संबंध में अत्यधिक क्षति मार्जिन, (ग) अत्यधिक बेशी क्षमता, (घ) वैश्विक देशों को चीन से हुए अत्यधिक निर्यातों के आधार पर पाटनरोधी शुल्क लागू किया है।

ङ. वर्तमान मामले और टी बी आर मामलों में कानून और तथ्य नितांत भिन्न हैं और इस प्रकार दोनों मामलों की तुलना नहीं की जा सकती। टी बी आर मामले में सेस्टेट का निर्णय वर्तमान मामले में सर्वथा अप्रासंगिक है।

च टैरिफ आयोग की रिपोर्ट के बारे में ए आई टी डी एफ के दावे भी तथ्यतः गलत हैं। वस्तुतः टैरिफ आयोग ने यह निष्कर्ष निकाला है कि टायर की कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि होने के कारण की गई थी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

11. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए विविध मुद्दों की निम्नानुसार जांच की गई है।

- जहां तक रेडियलाइजेशन के इस तर्क के मुद्दे का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि रेडियलाइजेशन धीरे-धीरे किया जा रहा है, तथापि, संबद्ध वरतु की पर्याप्त सांग बनी हुई है और निकट भविष्य में भी इसके बने रहने की संभावना है।
- प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि लागू पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने या अन्यथा के बारे में सिफारिशें प्रत्येक मामले के गुणदोष के आधार पर की जाती हैं।
- जहां तक इस मुद्दे का संबंध है, कि प्राधिकारी संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए अपने अधिकारियों को बाजार का दौरा करने के लिए भेज सकते हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि समस्त हितबद्ध पक्षकारों से यह आशा की जाती है कि वे किसी विशेष मामले में अपने अनुरोधों की पुष्टि करने के लिए उचित साक्ष्य के साथ मामले से संबंधित सूचना दायर करें। ए आई टी डी एफ ने इस बात को छोड़कर अपने तर्कीं की पुष्टि नहीं की है कि उसके विचारों को कई सरकारी एजेंसियों/संगठनों ने रिकॉर्ड में लिया है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि "हितबद्ध पक्षकार" की परिभाषा समावेशी परिभाषा है और इसलिए किसी हितबद्ध पक्षकार के विचारों पर तभी विचार किया जाता है जब ये किसी पाटनरोधी जांच में शामिल मुद्दों के लिए उचित हों। ए आई टी डी एफ ने प्रतिरक्ष्य आयोग की रिपोर्ट; मन्त्रीनीय न्यायाधिकरण (सेस्टेट) और डी जी (रक्षोपाय) के जांच परिणामों का हवाला दिया है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कार्टलीकरण, आयातों में वृद्धि आदि के कारण हुई क्षति के मुद्दों के निवारण हेतु स्थापित किए गए ये सक्षम निकाय हैं। इसके अलावा, प्राधिकारी इस विषय पर पाटनरोधी नियमों और विनियमों के अनुसार कार्रवाई करते हैं और वह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उसके समक्ष रखे गए समस्त संगत मुद्दों को संज्ञान में लेते हैं तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपना उचित निर्धारण और अपनी सिफारिशें करते हैं।

विचाराधीन उत्पाद तथा घरेलू समाज वस्तु

घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-
- (क) विचाराधीन उत्पाद बर्सों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड बाले टचुन और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स " हैं।
- (ख) जांच के दायरे में बर्सों तथा लारियों (ट्रकों सहित) में प्रयुक्त ऐसे गैर-रेडियल अथवा बॉयस टायर शामिल हैं, चाहे उन्हें अलग-अलग आयात किया गया हो या उनके संयोजन में।
- (ग) घरेलू उद्योग उत्पादित तथा संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं है।

(घ) पूर्ववर्ती जांचों में प्राधिकारी ने पाटनरोधी जांचों के प्रयोजनार्थ टायरों के भाल को एक उचित मापदंड के रूप में अपनाया था और इसे वर्तमान मामले में भी अपनाया जाना चाहिए।

ए आई टी डी एफ के अनुरोध

13. ए आई टी डी एफ ने यह तर्क दिया है कि आयातित संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु से तुलनीय नहीं है और यह कि प्राधिकारी निर्णायिक मामले से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए बाजार में अपने अधिकारियों को भेजें तथा ए आई टी डी एफ और उसके घटक पाटनरोधी प्राधिकारी की पूरी सहायता करेंगे।

प्राधिकारी द्वारा जांच

विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

14. मूल जांच और मध्यावधि समीक्षा में शामिल उत्पाद चीन जन.गण. तथा थाइलैंड के मूल के या वहां से निर्यातित "बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम ब्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स" है। आगे यह नोट किया जाता है कि जांच के दायरे में बसों तथा लारियों (ट्रकों सहित) में प्रयुक्त ऐसे गैर-रेडियल ब्यास टायर, ट्यूब और फ्लैप भी हैं जिनका आयात अलग-अलग किया गया हो और/अथवा उनके किसी संयोजन में।

15. टायरों का उत्पादन मौटे तौर पर दो प्रकारों अर्थात् रेडियल तथा गैर रेडियल में किया जाता है। बसों और लॉरियों में प्रयुक्त ट्यूब तथा फ्लैप रहित या सहित रेडियल टायर वर्तमान जांच के दायरे में नहीं आते हैं। टायरों, ट्यूबों और फ्लैपों का उत्पादन अलग-अलग किया जाता है; तथापि उनका ऑटोमोटिव अनुप्रयोगों में एक साथ अनिवार्य उपयोग किया जाता है। टायर सीमाशुल्क अध्याय सं. 40 के उप शीर्ष सं. 40112090 के अंतर्गत और ट्यूब तथा फ्लैप क्रमशः उपशीर्ष सं. 40131020 एवं 40129049 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि, ये सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं हैं।

16. वर्तमान समीक्षा जांच एक निर्णायिक समीक्षा जांच होने के कारण विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जैसा कि पूर्ववर्ती जांचों में परिभाषित किया गया है।

17. जहां तक ए आई टी डी एफ के इस तर्क का संबंध है कि आयातित संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु के तुलनीय नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है। इसके अलावा, प्राधिकारी की यह प्रणाली नहीं रही है कि वह साक्ष्य हासिल करने के लिए बाजार में घूमे। बहरहाल वर्तमान मामले के संबंध में विश्लेषण संबद्ध वस्तु के भार के अनुसार किया गया है, इसलिए व्यास के कारण आए अंतर, यदि कोई हो, पर ऐसे किसी विश्लेषण में स्वतः ध्यान दिया जाएगा।

18. आवेदक ने दावा किया है कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई खास अंतर नहीं है और यह कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित एवं संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिदेशन, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संबंध में तुलनीय है। दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं ने दोनों का अदल-बदल कर उपयोग किया है। इस प्रकार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु तथा

संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु को पाटनरोधी नियमों के अनुसार समान वस्तुएं माना जा रहा है।

घरेलू उद्योग का क्षेत्र

घरेलू उद्योग के विचार

19. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

क. वर्तमान समीक्षा याचिका मै. अपोलो टायर्स लि., मै. जे.के. टायर एंड इंड लि., सिएट लि. और मै. एम आर एफ लि. की ओर से आटोमोटिव टायर्स मैन्यु एसो. ने दायर की है जिसका समर्थन मै. बिरला टायर्स ने किया है।

ख. ए टी एम ए के इन चारों सदस्यों का उत्पादन संबद्ध उत्पाद के कुल भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक बनता है। मै. बिरला टायर्स ने विशेष रूप से याचिका का समर्थन किया है। इसके अलावा, निर्णायक समीक्षा के मामले में आधार अनिवार्य नहीं होता है।

ग. भागीदार कंपनियां नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

20. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में निम्नानुसार उपबंध है :-

"ख" "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातिकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा।

21. पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने और उसे जारी रखने की मांग करते हुए यह आवेदन मै. अपोलो टायर्स लि., मै. जे.के. टायर एंड इंड लि., सिएट लि. और मै. एम आर एफ लि. द्वारा प्रतिनिधित्व करने वाले घरेलू उद्योग की ओर से आटोमोटिव टायर्स मैन्यु एसो. (ए टी एम ए) ने दायर की है। इस आवेदन का समर्थन मै. बिरला टायर्स ने किया है। आवेदक ने यह दावा किया है कि संबद्ध वस्तु के भागीदार घरेलू उत्पादकों का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन के 50% से अधिक बनता है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार समर्थन के साथ भागीदार घरेलू उत्पादकों का उत्पादन संबद्ध वस्तु के कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है।

22. आगे यह नोट किया जाता है कि मै. सिएट लि. ने जांच अवधि अर्थात् 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 के दौरान श्रीलंका से *** मी.ट. संबद्ध वस्तु का स्वयं आयात किया है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि कुछेक मॉडलों का ही आयात किया गया है क्योंकि उनके पास भारत में सीमित उत्पादन क्षमताएं हैं। इसके अलावा, ये आयात अपेक्षाकृत उच्च कीमतों पर किए गए हैं। यह नोट किया जाता है कि मै. सिएट लि. ने संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादक की अपनी भूमिका से इंकार नहीं किया है। अतः सिएट लि. को

पाटनरोधी नियमों के अनुसार घरेलू उद्योग के क्षेत्र और दायरे से बाहर रखना अपेक्षित नहीं है। इस प्रकार मै. अपोलो टायर लि., मै. जे. के. टायर्स एंड इंड लि., सिएट लि. तथा मै. एम आर एफ लि. पाटनरोधी नियमों के अनुसार घरेलू उद्योग हैं।

23. उपर्युक्त के होते हुए भी यद्यपि, मै. सिएट लि. को उसके द्वारा किए गए आयातों के कारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग के क्षेत्र और दायरे से अलग भी रखा जाए तो भी मै.अपोलो टायर लि., मै. जे.के. टायर्स एंड इंड लि. तथा एम आर एफ लि का उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है और इस प्रकार वे पाटनरोधी नियमों के अनुसार घरेलू उद्योग होंगे।

छ. पाटन मार्जिन

घरेलू उद्योग के अनुरोध

24. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं इ

- चीन के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार किया जाना चाहिए। चीन के किसी भी उत्पादक ने सत्यापनीय साक्ष्य के साथ यह दावा नहीं किया है कि वे बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के पात्र हैं। कच्ची सामग्री के कारण लागत उत्पादन की कुल लागत में एक बड़ा हिस्सा होती है। लागत का लगभग 70% कच्ची सामग्री के कारण आता है जो चीन की कंपनियों के बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण के लिए प्रासंगिक है। इन कच्ची सामग्रियों से संबंधित विभिन्न पाटनरोधी मामलों में चीन की कंपनियों को एम ई टी व्यवहार प्रदान किया गया है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि चीन में कच्ची सामग्री की कीमतों में बाजार मूल्य नहीं दर्शाए जाते हैं। चीन का टायर उद्योग अधिकाशतः राज्य के स्वामित्वाधीन/नियंत्रित है। विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में रबड़ एक प्रमुख निविष्टि है। जहां तक रबड़ का संबंध है, चीन के उत्पादकों पर कई प्रतिबंध लगे हुए हैं। ऐसा मामला होने के कारण चीन की कोई कंपनी यह सिद्ध नहीं कर सकती कि वह बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के पात्र हैं। चीन में विभिन्न प्रकारों के टायरों के आयात पर प्रतिबंध है। इससे यह पता चलता है कि निविष्टियों की कीमत अथवा स्वयं उत्पाद की कीमत निर्धारित करने में राज्य का हस्तक्षेप है। चीन के संबद्ध वस्तु के किसी उत्पादक को बाजार अर्थव्यवस्थाका दर्जा प्रदान नहीं किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग ने श्रीलंका में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और विक्री कीमत के बारे में सूचना प्रदान की है जिसे सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाया जा सकता है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने भारत में उत्पादन लागत के बारे में सूचना प्रदान की है जिसे सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनाया जा सकता है।

● घरेलू उद्योग थाइलैंड के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत के बारे में कोई सूचना/साक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका और इसलिए उसने यह अनुरोध किया है कि लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत समायोजित उत्पादन लागत के अनुमानों के आधार पर थाइलैंड में सामान्य मूल्य की गणना की जाए।

- निर्यात कीमतें सी आई एफ कीमतें होती हैं जबकि सामान्य मूल्य कारखाना स्तर पर होते हैं; निर्यात कीमतों को समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, निर्यात के देश में अंतरदेशीय परिवहन, पत्तन हैंडलिंग और पत्तन प्रभार संबंधी व्यय, बैंक प्रभारों आदि के लिए समायोजित किया जाना चाहिए।
- पूर्ववर्ती जांचों के समय निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक था। यहां तक कि जांच की वर्तमान अवधि के दौरान पाटन मार्जिन भी काफी अधिक बना हुआ है। पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु, अत्यधिक भी है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आयात कीमत में वृद्धि हुई है, सी आई एफ निर्यात कीमत में वृद्धि यह निष्कर्ष निकालने के लिए अपर्याप्त है कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को समाप्त करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

25. "पाटन के निर्धारण" के संबंध में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध नहीं किया है।

सामान्य मूल्य

26. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुएउनके पास प्रश्नावलियां भेजीं। इसके उत्तर में चीन जन.गण के केवल एक उत्पादक और निर्यातक मै. हैंगझोऊ झोंगसी रबड़ कंपनी ने प्रश्नावली का अपना उत्तर दायर कर इस जांच में सहयोग किया है।

सामान्य मूल्य - चीन जन.गण.

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में भारत तथा डब्ल्यू.टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा की गई पाटनरोधी जांचों में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमों के अनुसार निर्यातक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा इस अनुमान के खंडन के अधीन है।
28. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध । के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हरतक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
- इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बहु खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है !

29. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी जांच शुरूआत की सूचना के परिणामस्वरूप चीन के एक उत्पादक/निर्यातक मै. हैंगझोऊ झोंगसी रबड़ कंपनी लि. ने प्रश्नावलियों का उत्तर प्रस्तुत किया है परंतु उसने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है और इस प्रकार उसने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन न करने का विकल्प छुना है। प्रश्नावलियों के उत्तरों का अवलोकन किया गया जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ यह बताया गया है कि झोंगसी द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद की बिक्री घरेलू बाजार में नहीं की गई थी अपितु वह निर्यात के लिए था।

चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

30. चूंकि चीन जन. गण. के एकमात्र सहयोगी उत्पादक/निर्यातक ने गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन न करने का विकल्प छुना है और चीन के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं और एम ई टी अनुमान के खंडन की मांग नहीं की है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

31. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उपबंधित है कि:

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहाँ यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वांस्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित

देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा । जहाँ उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा । जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी ।

32. चूंकि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (2) में उपबंधित गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का अनुमान अखंडित रहता है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित किया है । पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में यथानिर्धारित अन्य तरीकों के बारे में रिकॉर्ड में पर्याप्त सूचना न होने के कारण प्राधिकारी ने “किसी अन्य उचित आधार” की पद्धति अपनाकर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है ।

33. अतः प्राधिकारी ने प्राकृतिक रबड़ तथा कार्बन ब्लैक जैसी प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग के खपत कारक और सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत पर विचार करते हुए चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया है । इसके अलावा, 5 प्रतिशत का उचित लाभ मार्जिन अपनाया गया है । इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य *** अम.डा./किग्रा. बनता है ।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैंड के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है । अतः प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार, “उपलब्ध तथ्यों” के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए बाध्य हुए हैं । इस प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का निर्धारण अन्य बातों के साथ-साथ थाइलैंड से कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों अर्थात् प्राकृतिक रबड़ एवं कार्बन ब्लैक सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग के खपत कारक और सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत पर विचार करते हुए किया है ।

निर्यात कीमत

मै. हॉंगझोऊ झांगसी रबड़ कं. लि.

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के केवल एक उत्पादक/निर्यातक अर्थात् मै. हॉंगझोऊ झांगसी रबड़ कं. लि. ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है । उत्तर के अवलोकन से यह नोट किया गया है कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को *** मी.ट. संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है । अंतरदेशीय भाड़े, पत्तन हैंडलिंग प्रभारों, ऋण लागत, गारंटी दावे और वैट के लिए समायोजनों का दावा किया गया है । मौके पर सत्यापन के दौरान यह नोट किया गया था कि ऋण लागतें दावा की गई लागतों से मामूली भिन्न हैं अतः मौके पर सत्यापन के दौरान नोट किए गए अनुसार इन लागत हेतु समायोजन को स्वीकार किया गया है । जहाँ तक अन्य समायोजनों का संबंध है, उन्हें यथासत्यापित रूप में स्वीकार किया गया है और अनुमति दी गई है । इस प्रकार निकाली गई निवल निर्यात कीमत *** अम.डा./मी.ट. बनती है ।

असहयोगी निर्यातक/उत्पादक

36. चूंकि चीन जन.गण. के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक और थाइलैंड के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने ऐसी कोई सूचना प्रदान नहीं की है जिसका प्रयोग निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु किया जा सके । इसलिए प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर "निर्यात कीमत" का निर्धारण किया है ।

ज. पाटन मार्जिन

37. कारखाना द्वार पर इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर चीन जन गण के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

क्र.सं.	देश	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	
				अम.डा./ किग्रा.	अम.डा./ किग्रा. (%) रेंज
1	चीन जन.गण.				
	मै. हेंगझाऊ झोगजी रब्ब कं. लि.,	***	***	***	25-35
	अन्य	***	***	***	30-40
2	थाइलैंड	***	***	***	25-35

पाटन जारी रहने वाले उसकी पुनरावृत्ति होने की समावेशना

घरेलू उद्योग के अनुरोध

38. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क किए हैं :

- पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद भी संबद्ध देशों के निर्यातकों और उत्पादकों ने पाटित कीमतों पर सामग्री का निर्धारित जारी रखा है । चूंकि विगत में संबद्ध देशों से पाटन लगातार जारी रहा है, इसलिए इस बात की उचित आशंका है कि वर्तमान मामले में शुल्क समाप्त किए जाने से निश्चित तौर पर चीन जन गण और थाइलैंड से पाटन को और तेज कर दिया जाएगा ।
- यदि संगत अवधि में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का कोई निर्यात नहीं हुआ है तो प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से भारतीय घरेलू बाजार से पाटन की पुनरावृत्ति होगी । वर्तमान मामले में चीन जन गण से भारी मात्रा में आयात होने की सूचना दी गई थी ।
- मूल अवधि और परवर्ती अवधियों के बीच आयात की मात्रा में गिरावट आई है लेकिन यह अभी भी पर्याप्त मात्रा में है जिससे पाटन की संभावना की पुष्टि होती है । इसके अलाया, संबद्ध देशों में अतिरिक्त उत्पादन क्षमताएं हैं । चीन के मामले वें सच्चाई यह है कि रेडियोलाइजेशन तेजी से प्रगति कर रहा है और सरकार ने घरेलू बाजार के लिए संबद्ध वस्तु के विनिर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया है, चीन और थाइलैंड के उत्पादकों के पास बेशी

क्षमताएँ पड़ी हुई हैं। निम्नलिखित तालिकाओं से यह पता चलता है कि चीन और थाइलैंड के उत्पादकों द्वारा बेशी क्षमताएं रखी गई हैं।

क्षमता तालिका- चीन जन.गण.

क्र.सं.	कंपनी का नाम	वास्तविक क्षमता*
		(मिलियन)
1	एओलस टायर क. लि. (चाइना हाओहुआ कैमिकल (ग्रुप) कार्पो. लि., संयुक्त उद्यम)	6
2	अनहुई कझुआन टायर क. लि.	0.1
3	बीजिंग कैपिटल टायर कं. लि.	2
4	चेंग सिंह रबर (जियामिन) इंड लि.	95
5	चाइना इंटरप्राइजेज लि. युनिचुआन सीएसआई, यिनेचुआन	2
6	कोपर चेंगशान (शेनडाँग) टायर कं. लि.	10.9
7	कॉपर केन्डा टायर (कुनशान) कं. लि. (कोपर टायर एंड रबड कं. एंड केन्डा रबड इंडस्ट्रियल कं. लि. संयुक्त उद्यम)	5.4
8	डाँग फेना लिओन टायर कं. लि.	3
9	गिटी टायर (चाइना) इन्वेस्टमेंट कं. लि. चौगविंग, सिचुआन	63.8
10	गुड फ्रेड टायर कं. लि.	1
11	गुआनझोऊ पियरल रीवर रबड टायर लि.	1
12	गुइलिन टायर कं.	1
13	गुइझोऊ टायर कं. लि.	3
14	हेंगझोऊ झांगसी रबड कं. लि.	30
15	हेबेर्झ स्टारब्राइट कं. लि. (मेन इंडस्ट्रीयल टायर) एल एल सी)	0.047
16	हवा फॉग रबड (चाइना) कं. लि. ()हवा फॉग रबड इंडस्ट्री कं. लि.	54.75
17	केन्डा रबड (चाइना) कं. लि. (केन्डा रबड इंडस्ट्रियल कं. लि.)	70
18	लॉगकोऊ जिंगलॉग टायर कं. लि.	0.5
19	किंगडाओं डबलस्टार टायर इंडस्ट्रियल कं. लि.	6
20	किंगडाओं हेंगडा टायर कं. लि.	0.6
21	किंगडाओं क्वीझोऊ रबड कं. लि.	0.3
22	किंगडाओं टेंगजियान टायर कं. लि.	1
23	शानडाँग लिंगडाँग रबड कं. लि.	21
24	शेंगडाँग लुहे ग्रुप जनरल कं.	9
25	शानडाँग शेंगटाई टायर कं. लि.	3
26	शेनडाँग झांगसी टायर कं. लि.	1
27	ट्रिंगल ग्रुप कं. लि.	4
28	वेनडेंग सनफेंग टायर कं. लि.	1
29	जियामेन रबड फैक्ट्री	0.8
30	जियांगजिंग कुनलुन टायर कं. लि.	1
31	जुझोऊ जुगोग टायर कं. लि.	3.5
32	यूनान टायर कं.	0.73
33	कुल क्षमता	402.427

* स्रोत दिसंबर, 2011 में तैयार यूरोपीय रबड जनरल की ग्लोबल टायर रिपोर्ट

क्षमता तालिका-थाइलैंड

क्र.सं.	कंपनी का नाम	वार्स्टिविक क्षमता*
	(मिलियन)	
1	डीसटोन लिमिटेड	0.02
2	गुडवियर थाइलैंड लि. (गुडइयर)	2.50
3	मेकलिन सियाम ग्रुप कं. लि. (ग्रुप मिचेलिन)	
4	नोंगखई, सराबुरी	1.60
5	फरापाडियांग समुद्रपराकरन	5.40
6	ओटानी टायर कं. लि.	0.50
7	सियाम रबड़ लि.	5.40
8	थाई ब्रिजस्टोन कं. लि. (ब्रिजस्टोन कार्प.)	
9	रनसिट, पथुमथानी	1.70
10	वीर रबड़ कार्प., लि. एंड सब्सिडरी कं.	17.00
11	कुल क्षमता	34.12

* स्रोत दिसंबर, 2011 में तैयार यूरोपीय रबड़ जनरल की ग्लोबल टायर रिपोर्ट

- उपलब्ध ज्ञात क्षमताओं पर विचार करते हुए भारतीय मांग की समग्र पूर्ति पाठित आयातों द्वारा आसानी से की जा सकती है। एक बार पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर इस बात की प्रबल संभावना है कि संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा समूची भारतीय मांग की पूर्ति की जा सकती है। संबद्ध देशों के निर्यातकों और उत्पादकों की ओर से सतत पाटन किया जा रहा है जो पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर और अधिक तेज हो जाएगा। पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन में सर्वाधिक वृद्धि होने की संभावना है। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में सर्वाधित स्तर पर पाटन होने की संभावना है।

मै. हैंगझोऊ झोंग्सी रबड़ कंपनी लि. के अनुरोध

39. मै. हैंगझोऊ झोंग्सी रबड़ कंपनी लि. ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिया है :

- अप्रयुक्त क्षमताओं के बारे में घरेलू उद्योग के दावे की पुष्टि घरेलू उद्योग ने नहीं की है। निर्यातक के पास कोई बेशी क्षमता नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

40. संगत उपबंधों के अनुसार किसी निर्णायक समीक्षा जांच में निम्नलिखित पहलुओं की जांच करना जरूरी होता है :

- क्या पाटन जारी है; और यदि हां तो क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उसके जारी रहने की संभावना है;
- ऐसे मामले में जहां पाटन जारी नहीं है, वहां क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन की पुनरावृति होने की संभावना है।

41. किसी निर्णयक समीक्षा जांच में पाटन की संभावना की जांच करने के लिए पाटनरोधी नियमों में कोई विशेष पद्धति निर्धारित नहीं है। तथापि, ऐसे मामले में जहां जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के निर्यातों के बारे में अत्यधिक सकारात्मक पाटन मार्जिन होता है तो इस बात की संभावना होती है कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने की संभावना है बशर्ते तथ्यों से अन्यथा प्रकटित न हो। तथापि, ऐसे मामले में जहां जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का कोई निर्यात नहीं हुआ है, वहां इसका तात्पर्य यह होगा कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन की पुनरावृति होने की संभावना नहीं है। ऐसे मामलों में अन्य संगत कारकों की जांच करना अपेक्षित होता है, उदाहरणार्थ पाटन की गहनता के बारे में ऐसा कोई साक्ष्य जिसका निर्धारण तीसरे देश के बाजारों में संबद्ध वस्तु के निर्यातों पर विचार करते हुए किया जा सके।

42. वर्तमान मामले में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात किया गया है भले ही इसकी मात्रा कम रही हो। परंतु आयात अत्यधिक हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु का निर्यात पाटित कीमत पर किया गया है और इससे घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती हो रही है और कम कीमत पर बिकी हो रही है। यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है। संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए अप्रयुक्त क्षमताओं पर विचार करते हुए इस मत को आगे और बल मिलता है।

43. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध वस्तु का पाटन जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा, पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है।

ट. क्षति

हिंगज़ोऊ झोंगसी रबड़ कं. लि., चीन जन. गण.

मै. हेंगज़ोऊ झोंगसी रबड़ कं. लि., चीन जन. गण.

44. मै. हेंगज़ोऊ झोंगसी रबड़ कं. लि., चीन जन. गण. ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- कच्ची सामग्री की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि होने के कारण बिकी लागत में बढ़ोतरी हुई है।
- वर्ष 2007–08 से जांच अवधि के दौरान भारतीय उत्पादन और बिकी में लगातार वृद्धि हुई है और अधिकांश विनिर्माताओं द्वारा जांच अवधि के दौरान 92 प्रतिशत से अधिक का क्षमता उपयोग किया जाना इस बात का निर्णयक साक्ष्य है कि चीन से हुए आयातों और क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।
- क्षतिरहित कीमत की गणना हेतु घरेलू उद्योग ने निवेश पर 22 प्रतिशत तक आय की मांग की है। उद्योग अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और जर्मनी के शीर्षस्थ टायर विनिर्माता और विश्व के चौथे सबसे बड़े टायर विनिर्माता कंपनी की आय की दर लगभग 11 प्रतिशत है। अतः घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना करते समय 10–11 प्रतिशत से अनधिक की आय की तुलनीय दर पर विचार किया जाना चाहिए।
- लाभ में कमी और अतिरिक्त अर्जन जिसे घरेलू उद्योग द्वारा क्षति मा नाम दिया गया है, की वजह निम्नलिखित कारण रहे हैं :

- कच्ची सामग्री की कीमत में उतार-चढ़ाव
 - कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण कच्ची सामग्री में कीमत वृद्धि को उपभोक्ताओं पर डाले में उद्योग की अक्षमता
 - बायस खंड में अतिरिक्त क्षमताओं का सुजन (रेडियलाइजेशन की ओर रुख किए जाने के कारण) जिसकी वजह से घरेलू उद्योग में दक्षता में कमी आई ।
- कारणात्मक संबंध : घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का व्यवहार आयात की मात्रा/कीमत से स्वतंत्र है । आयातों की लाभप्रदता में भी कमी आई है, आयात मात्रा में भी गिरावट आई है ।

ए आई टी डी एफ के अनुरोध

- डॉलर मुद्रा की तुलना में भारतीय रूपए में 25 प्रतिशत तक का अवमूल्यन हुआ है और इसके अलावा, ट्रक/बस बायस प्लाई नाइलोन फैब्रिक टायरों के आयात पर प्रतिबंध लगाया गया है और घरेलू टायर प्रतिस्पर्धियों द्वारा पूँजी पर आय की दर वैश्विक मानकों की तुलना में काफी अच्छी है इसलिए प्राधिकारी को अपने पूर्ववर्ती निर्णय पर पुनर्विचार करना चाहिए और उक्त उत्पाद के आयात पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त करना चाहिए । सड़क परिवहन लागत जिसमें ट्रक स्वामी की परवर्ती लागत का 35 प्रतिशत टायर लागत शामिल होती है, को कम कर अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति पर रोक लगाने की तत्काल जरूरत है । पिछले एक वर्ष में प्राकृतिक रबड़ की कीमत में सर्वोच्च 240 रूपए प्रति किग्रा से घटकर 192 रूपए प्रति किग्रा हो गई है अर्थात् 20 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है और पैट्रो उत्पाद आधारित निविष्टि में जिनका प्रयोग टायर के विनिर्माण में होता है, कि कच्ची सामग्री की कीमतें वर्ष 2008 के औसत से नीचे चल रही हैं । इन निविष्टियों में सिंथेटिक रबड़, नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक, कार्बन ब्लैक, रबड़ रसायन आदि शामिल हैं ।

घरेलू उद्योग की ओर से किए गए अनुरोध

45. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई दो व्यापक जांचों से इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । वर्तमान अवधि में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में इन पूर्ववर्ती जांच परिणामों पर विचार किया जाना चाहिए ।
- रेडियलाइजेशन के कारण भारत में बायस टायरों की मांग में कमी नहीं आई है । भारत और चीन में रेडियलाइजेशन अलग-अलग स्तरों पर हुआ है । भारत में बायस टायरों की भारी मांग है ।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद विचाराधीन उत्पाद के आयात में गिरावट आई है । तथापि, संभावित कीमतों की पुष्टि करने और पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन एवं क्षति की संभावना प्रदर्शित करने के लिए आयातों की मात्रा अभी भी काफी अधिक है । आयात की मात्रा यद्यपि कम है तथापि, यह संभावना के विश्लेषण हेतु काफी अधिक है ।
- भारित औसत आयात कीमत (मूल सीमाशुल्क जोड़ने के बाद) घरेलू उद्योग की निवल बिकी प्राप्ति से काफी कम है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है ।

- चीन से हुए आयात की पहुंच कीमत उत्पादन लागत और घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है।
- घरेलू उद्योग बाजार में उत्पाद की बिक्री जिस कीमत पर कर रहा है वह घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है। अतः घरेलू उद्योग पहले से ही उत्पाद की कम कीमत पर बिक्री कर रहा है। वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को उत्पाद की बिक्री कीमत में आगे और कटौती करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।
- जहां तक आर्थिक मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन का प्रश्न है, हालांकि पूर्वगती वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में उत्पादन और घरेलू बिक्री में मामूली गिरावट आई है।
- बिक्री लागत में वृद्धि कच्ची सामग्री की कीमत में सार्वभौमिक वृद्धि के कारण हुई है।
- घरेलू उद्योग के लाभ में वर्ष 2009–10 तक सुधार हुआ। तथापि, चालू वर्ष में उसमें गिरावट आई। निवेश पर आय और नकद लाभ में लाभप्रदता के समान प्रवृत्ति रही है।
- घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है।
- भागीदार कंपनियां एक बहुउत्पाद कंपनी हैं और इसलिए रोजगार के स्तर और मजदूरी से घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटन के स्पष्ट प्रभाव (प्रतिकूल प्रभाव) का पता नहीं चल सकता है।
- घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। तथापि वर्तमान स्थिति और घरेलू उद्योग के नवीनतम निष्पादन पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग वर्तमान कीमत पर पाटित आयात जारी रखने की अनुमति दिए जाने की स्थिति में अपनी उत्पादकता को बरकरार रखने में समर्थ नहीं रहेगा।
- क्षति मापदंडों में सुधार पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप हुआ है। तथापि, यदि शुल्क समाप्त किया जाता है तो आयात की मात्रा में एक बार फिर वृद्धि होने की संभावना है।
- विदेशी उत्पादकों द्वारा अर्जित निवेश पर आय की दर की तुलना आर्थिक विकास के व्यापक भिन्न स्तर को देखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त निवेश पर आय के साथ नहीं की जा सकती और न ही की जानी चाहिए।
- वर्ष 2008–09 में विद्यमान परिस्थितियां वैशिक मंदी से प्रभावित हुई थीं। वर्ष 2009–10 में आटोमोबाइल बाजार में अभूतपूर्व और अप्रत्याशित वृद्धि हुई थी।
- डॉलर की मजबूती से भारत में टायरों के आयात पर चुनिन्दा ढंग से प्रभाव नहीं पड़ रहा है। इसका प्रभाव कच्ची सामग्री तथा अन्य लागतों पर पड़ रहा है। इस प्रकार विनिमय दरों में परिवर्तन का प्रभाव घरेलू उद्योग और आयातों दोनों पर समान दिशा में पड़ रहा है।
- पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से होने वाले आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती किए जाने की संभावना है।
- पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में कीमत में अत्यधिक कटौती की मौजूदगी से इस उत्पाद के अत्यधिक कीमत प्रतिस्पर्धी होने के कारण उपभोक्ताओं द्वारा आयातित सामग्री की ओर रुख किए जाने की संभावना है।

- संबद्ध देशों से शुल्क प्रदत्त आयात कीमत घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में काफी कम होगी। चूंकि आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती होगी, इसलिए आयातित उत्पाद की मांग होने की संभावना है।
- यदि शुल्क को समाप्त करने की अनुमति दी जाती है और परिणामतः संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि होती है तो घरेलू उद्योग संबद्ध उत्पाद की कीमत में भारी कटौती करने के लिए बाध्य होगा। यदि घरेलू उद्योग कीमत में कमी करने के लिए बाध्य होगा तो इसका स्वाभावित प्रभाव घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर पड़ेगा। लाभ में गिरावट के कारण नकद व्यापार और निवेश पर आय में कमी आएगी। ऐसी स्थिति में जहां संबद्ध देशों के निर्यातक अत्यधिक बेशी क्षमताएं रख रहे हैं, वहां यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में इस मात्रा में वृद्धि होगी। यदि घरेलू उद्योग बिकी मात्रा गवाएगा तो इससे काफी अधिक क्षति होगी क्योंकि बिकी मात्रा में गिरावट की परिणति मालसूची के स्तर में वृद्धि, उत्पादन, क्षमता उपयोग और उत्पादकता में गिरावट के रूप में होगी।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिका में नकद लाभ के बारे में सूचना नहीं है, घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि नकद लाभ का निर्धारण करने के लिए संगत सूचना याचिका में निहित है।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी संबद्ध देशों के निर्यातकों और उत्पादकों ने पाटित कीमतों पर सामग्री का निर्यात जारी रखा है। इस बात की उचित शंका है कि वर्तमान मामले में शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन जन गण और थाइलैंड से पाटन में निश्चित तौर पर वृद्धि की जाएगी।
- पाटन की पुनरावृति होने की संभावना (क) ऐसी स्थिति में होती है जहां तीसरे देशों को निर्यात पाटित कीमतों पर किए जाते हैं। (ख) ऐसे निर्यातों की कीमत भारत को हुए निर्यात की कीमत से तुलनीय होती है। (ग) ऐसी कीमतों पर विचार करते हुए आयातों की पहुंच कीमत (i) बिकी कीमत, (ii) क्षति रहित कीमत, (iii) घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम होती है। यह माना जाना चाहिए कि इन देशों के उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में सामग्री का पाटन किया जाएगा जिससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होगी।
- घरेलू उद्योग की स्थिति पहले से नाजुक है। इस बात की संभावना है कि लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव में घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार होगा।
- ऐसी स्थिति में जहां घरेलू उद्योग को कोई सतत क्षति नहीं हुई है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना की जांच करना अनिवार्य है।
- घरेलू उद्योग ने विभिन्न अन्य देशों को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के हुए निर्यातों के बारे में सूचना प्रदान की है। संबद्ध देशों के उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा अन्य देशों के बाजारों को पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है।
- घरेलू उद्योग द्वारा जिस कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिकी की जा रही है, वह कीमत संबद्ध देशों से कई अन्य देशों को किए जा रहे सामग्री के निर्यात की कीमत से काफी अधिक है।
- संबद्ध देशों द्वारा रखी जा रही बेशी उत्पादन क्षमताएं और उनका निर्यात अभिमुखीकरण चीन के मामले में यह सच है कि रेडियेलाइजेशन तेजी से प्रगति कर रहा है, और सरकार

ने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु के विनिर्माण पर रोक लगा दी है, चीन में उत्पादकों के पास बेशी क्षमताएं पड़ी हुई हैं। उत्पादकों की वार्षिक क्षमताएं 1-6.5 मिलियन के बीच हैं। चीन के उत्पादकों का निर्यात अभिमुखीकरण 30-100 प्रतिशत के बीच है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

46. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की निम्नानुसार जांच की गई है:-

- प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का विश्लेषण करते समय कच्ची सामग्री कीमत में हुई वृद्धि के कारण बिकी लागत पर विधिवत विचार किया गया है।
- जहां तक भारतीय उत्पादन में वृद्धि तथा अधिकांश घरेलू उत्पादकों द्वारा बिकी और बेहतर क्षमता उपयोग किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण इनमें सुधार होने की आशा है। आगे यह नोट किया जाता है कि पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पाटनरोधी शुल्क में समुचित संशोधन किया गया था।
- जहां तक निवेश पर 22 प्रतिशत तक आय के मुददे का संबंध है, प्राधिकारी ने संगत नियमों और विनियमों तथा सुसंगत पद्धति के अनुसार इसका निर्धारण किया है।
- जहां तक इस मुददे का संबंध है कि घरेलू उद्योग को क्षति कच्ची सामग्री की कीमत में घट-बढ़, उद्योग द्वारा कच्ची सामग्री की कीमत में हुई वृद्धि को कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण उपभोक्ता पर डालने में असमर्थता और बायस खंड में बेशी क्षमताओं के सृजन (रेडियलाइजेशन की ओर रुख किए जाने के कारण) जिससे घरेलू उद्योग में कुशलता में कमी आई है, आदि के कारण हो सकती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमत में अत्यधिक कटौती तथा कम कीमत पर बिकी हुई है और पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण घरेलू उत्पादक स्पष्ट तौर पर निविष्टि की कीमत में वृद्धि के बावजूद बेहतर बिकी कीमत प्राप्त नहीं कर सके हैं।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का व्यवहार आयात की मात्रा/कीमत से स्वतंत्र है, और यह कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है। यद्यपि, आयात की मात्रा में कमी आई है, प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकार द्वारा उल्लिखित तथ्यों से सहमत हैं परंतु उसके विश्लेषण से सहमत नहीं हैं क्योंकि घरेलू उत्पादकों को कीमत घटक के कारण क्षति हुई है जिस पर भारतीय बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण प्रभाव पड़ा है। जहां तक बाजार में पाटित आयातों की पर्याप्त मात्रा की मौजूदगी का संबंध है, इसका घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है।
- जहां तक इस मुददे का संबंध है, कि डॉलर के मुकाबले भारतीय रूपया कमज़ोर हो रहा है, प्राधिकारी की यह सामान्य पद्धति रही है कि जांच अवधि के संगत आंकड़ों पर विचार किया जाए।
- जहां तक प्राकृतिक रबड़ की कीमत कम होने के मुददे का संबंध है, प्राधिकारी ने अपना विश्लेषण करते समय संगत कारकों को संज्ञान में लिया है।

47. प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए क्षति मापदंडों की निम्नानुसार तथ्यपरक जांच की है।

48. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

49. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा और घरेलू उद्योग पर उसके कीमत प्रभाव तथा कीमत एवं लाभप्रदता पर प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, का परीक्षण किया जा सके।

संचयी निर्धारण

50. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह उपबंध है कि जब एक से अधिक देश से हुए किसी उत्पाद के आयात की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का निर्धारण अपेक्षित होता है जब वह यह निर्धारित करे कि :-

- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% से अधिक है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक है, और
- (ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :-

- चीन जन गण और थाइलैंड से भारत को संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया जा रहा है।
- प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।
- प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

- आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तुओं से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट हो जाता है :-

क. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद और आवेदक द्वारा विनिर्मित उत्पाद में तुलनीय गुणधर्म हैं। दूसरे शब्दों में विभिन्न संबद्ध देशों और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त वस्तु आपस में समान वस्तुएं हैं।

ख. ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो विभिन्न देशों से आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का प्रयोग कर रहे हैं। आयातित और घरेलू संबद्ध वस्तु दोनों का अदल-बदल कर प्रयोग किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच सीधी एवं आयातित उत्पादों के बीच आपस में प्रतिस्पर्धा है।

ग. संबद्ध देशों के निर्यातिकों और घरेलू उद्योग ने समान अवधियों में उन्हीं ग्राहकों को उत्पाद की बिक्री की है। बिक्री माध्यम तुलनीय है।

घ. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा काफी अधिक है।

52. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के निर्यातों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी निर्धारण करना उचित होगा।

मात्रात्मक प्रभाव

मांग का निर्धारण

53. भारत में संबद्ध वस्तु की खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री और समस्त देशों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस बारे में व्यौरे निम्नानुसार हैं :-

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	निर्धारित मांग	मी.ट.	604,619	598,820	705,625	659,114
2	चीन जन.गण.	मी.ट.	10,770	7,644	4,232	2,171
3	थाइलैंड	मी.ट.	36	11	15	220
4	संबद्ध देश	मी.ट.	10,805	7,656	4,248	2,391
5	अन्य देश	मी.ट.	1,962	871	1,003	1,168
6	घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	499,477	486,036	549,634	526,854
7	सहयोगी घरेलू उत्पादक की बिक्री	मी.ट.	67,356	86,158	132,583	86,907
8	अन्य भारतीय उत्पादक	मी.ट.	25,018	18,101	18,157	41,794

प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वित्तीय वर्ष की तुलना में वर्ष 2008-09 को छोड़कर समूची क्षति अवधि के दौरान देश में उत्पाद की मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई है परंतु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में गिरावट आई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में वृद्धि लगभग 9.01% रही थी।

आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

54. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (ii) में यह उपबंध है कि "पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है"

"पाटित आयातों की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में भारी वृद्धि हुई है।"

55. आयात और बाजार हिस्से के बारे में व्यौरे निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं :-

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	आयातक	मी.ट.	12,767	8,526	5,250	3,559
2	चीन जन.गण.	मी.ट.	10,770	7,644	4,232	2,171
3	थाइलैंड	मी.ट.	36	11	15	220
4	संबद्ध देश	मी.ट.	10,805	7,656	4,248	2,391
5	अन्य देश	मी.ट.		1,962	871	1,003
						1,168

क्र. सं.	आयातों में बाजार हिस्सा	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1.	चीन जन.गण.	%	84.35	89.66	80.61	60.99
2.	थाइलैंड	%	0.28	0.13	0.29	6.18
3.	अन्य देश	%	15.37	10.21	19.10	32.83

प्राधिकारी नोट करते हैं कि समूची क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण से विचाराधीन उत्पाद की आयात मात्रा में गिरावट आई है जबकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान थाइलैंड से आयात की मात्रा में वृद्धि हुई है। यह नोट किया जाता है कि जहां क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा में गिरावट आई है और यह पाटित कीमतों पर है तथा यह घरेलू उद्योग की कीमत को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त है।

कीमत प्रभाव

कीमत कटौती

56. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती। निम्नलिखित तालिका से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति, आयातों की पहुंच कीमत और कीमत कटौती का ताता चलता है :

चीन जन.गण.

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	मात्रा	मी.ट.	10,770	7,644	4,232	2,171
2	मूल्य	लाख रुपए	9,243	7,600	4,531	2,386
3	निर्यात कीमत	रु./ किग्रा.	85.82	99.42	107.06	109.89
4	पहुंच कीमत	रु./ किग्रा.	0.86	0.99	1.07	1.10
5	निर्धारणीय मूल्य	रु./ किग्रा.	86.68	100.42	108.13	110.99
6	सीमाशुल्क %	%	12.5	10	10	10
7	सीमाशुल्क राशि	रु./ किग्रा.	10.84	10.04	10.81	11.10

8	3 % की दर से सेस	रु./ किग्रा.	0.33	0.30	0.32	0.33
9	पहुंच मूल्य	रु./ किग्रा.	97.84	110.76	119.27	122.43
10	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
11	कीमत कटौती	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
12	कीमत कटौती %	% रेंज	20-30	20-30	15-25	25-35

थाइलैंड

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	मात्रा	मी.ट.	36	11	15	220
2	मूल्य	लाख रुपए	33	18	20	277
3	निर्यात कीमत	रु./ किग्रा.	91.14	156.26	131.74	125.96
4	पहुंच प्रभार	रु./ किग्रा.	0.91	1.56	1.32	1.26
5	निर्धारणीय मूल्य	रु./ किग्रा.	92.05	157.83	133.06	127.22
6	सीमाशुल्क %	%	12.5	10	10	10
7	सीमाशुल्क राशि	रु./ किग्रा.	11.51	15.78	13.31	12.72

8	3 % की दर से सेस	रु./ किग्रा.	0.35	0.47	0.40	0.38
9	पहुंच मूल्य	रु./ किग्रा.	103.91	174.08	146.76	140.33
10	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
11	कीमत कटौती	रु./ किग्रा.	***	***	***	***
12	कीमत कटौती %	% रेज	15-25	(15-25)	0-10	15-25

संबद्ध देश

क्र. सं.	विवरण	इकाई	जांच अवधि
1	मात्रा	मी.ट.	2391
2	मूल्य	लाख रुपए	2663
3	निर्यात कीमत	रु./ किग्रा.	111.37
4	पहुंच प्रभार	रु./ किग्रा.	1.11
5	निर्धारणीय मूल्य	रु./ किग्रा.	112.49
6	सीमाशुल्क %	%	10
7	सीमाशुल्क राशि	रु./ किग्रा.	11.25
8	3 % की दर से सेस	रु./ किग्रा.	0.34
9	पहुंच मूल्य	रु./ किग्रा.	124.07
10	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	रु./ किग्रा.	***
11	कीमत कटौती	रु./ किग्रा.	***
12	कीमत कटौती %	% रेज	25-35

उपर्युक्त तालिकाओं से प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयात कापहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम रहा है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है।

कम कीमत पर बिक्री

57. निम्नलिखित तालिका से घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत, आयातों की पहुंच कीमत और कम कीमत पर बिक्री का पता चलता है।

क्र.सं.	विवरण	इकाई	चीन जन.गण.	थाइलैंड	संबद्ध देश
1	मात्रा	मी.ट.	2,171	220	2391
2	मूल्य	लाख रुपए	2,386	277	2663
3	निर्यात कीमत	रु./ किग्रा.	109.89	125.96	111.37
4	पहुंच प्रभार	रु./ किग्रा.	1.10	1.26	1.11
5	निर्धारणीय मूल्य	रु./ किग्रा.	110.99	127.22	112.49
6	सीमाशुल्क %	%	10	10	10
7	सीमाशुल्क राशि	रु./ किग्रा.	11.10	12.72	11.25
8	3 % की दर से सेस	रु./ किग्रा.	0.33	0.38	0.34
9	पहुंच मूल्य	रु./ किग्रा.	122.43	140.33	124.07
10	घरेलू उद्योग की एन आई पी	रु./ किग्रा.	***	***	***
11	कीमत कटौती	रु./ किग्रा.	***	***	***
12	कीमत कटौती %	% रेंज	25-35	15-25	25-35

58. उपर्युक्त तालिकाओं से यह देखा जाता है कि चीन जन.गण. और थाइलैंड से भारत में संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से कम रही है जिसकी वजह से कम कीमत पर बिक्री हुई है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले मापदंड

59. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में प्राधिकारी के लिए यह अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहां तक ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूँजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :

क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्री

60. क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के बारे में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	क्षमता	मी.ट.	594,086	616,481	640,573	642,764
2	उत्पादन	मी.ट.	558,836	527,355	574,754	571,051
3	क्षमता उपयोग	%	94.07	85.54	89.72	88.84
4	घरेलू बिक्री	मी.ट.	499,477	486,036	549,634	526,854

प्राधिकारी नोट करते हैं कि-

- i. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में इसमें मामूली गिरावट आई है ।
- ii. आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में गिरावट आई है परंतु ऐसा स्पष्ट तौर पर उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन के कारण क्षमता के उपयोग में बदलाव के कारण हुआ है ।
- iii. घरेलू बिक्रियों में उत्पादन जैसी प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है । पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद घरेलू उद्योग अपनी बिक्री मात्रा को बढ़ाने में समर्थ नहीं हुआ है । घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि यदि सतत पाटन ने उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा में वृद्धि में रुकावट न डाली होती तो बिक्री में आगे वृद्धि हो सकती थी ।

लाभ/हानि, नकद प्रवाह, लगाई गई पूंजी पर आय

61. घरेलू उद्योग के लाभ, बिक्री कीमत, लगाई गई पूंजी पर आय से संबंधित सूचा निम्नानुसार है :-

सूचीबद्ध

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	लाभ/हानि	लाख रुपए	100	26	126	(10)
2	नकद लाभ	लाख रुपए	100	37	125	9
3	नियोजित पूंजी पर आय	%	100	43	115	13

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2008-09 में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई क्योंकि पाटनरोधी शुल्क स्पष्टतः कारगर नहीं था । इसमें वर्ष 2009-10 में पर्याप्त सुधार हुआ परंतु इसमें तेजी से गिरावट आई और जांच अवधि में यह नकारात्मक बन गया । लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभ में वही प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई जैसी कि लाभ के संबंध में हुई थी ।

63. प्राधिकारी ने निम्नलिखित तालिका के अनुसार क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत और बिक्री कीमत में प्रवृत्तियों में विचार कर लाभप्रदता की जांच की है । यह देखा जाता है कि बिक्री लागत और बिक्री कीमत में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है । आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2009-10 तक बिक्री कीमत में वृद्धि आनुपातिक आधार पर बिक्री लागत में हुई वृद्धि के कुछ समान रही थी । तथापि, जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान

बिक्री कीमत में हुई वृद्धि से काफी अधिक थी। परिणामतः जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को लाभप्रदता का तुकसान हुआ।

सूचीबद्ध आंकड़े

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	बिक्री की लागत	रु./किग्रा.	100	119	113	147
2	बिक्री मूल्य	रु./किग्रा.	100	111	113	134
3	लाभ/हानि	रु./किग्रा.	100	26	115	(10)

मालसूची

64. निम्नलिखित तालिका में क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची का व्यौरा दिया गया है :-

क्र. सं	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	प्रारंभिक स्टॉक	मी.ट.	28,758	33,731	34,590	25,071
2	अंतिम स्टॉक	मी.ट.	33,731	34,590	25,071	41,297
3	औसत स्टॉक	मी.ट.	31,244	34,160	29,831	33,184

प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उद्योग की मालसूची में गिरावट आने की आशा थी, तथापि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मालसूची में वृद्धि हुई है।

रोजगार और मजदूरी

65. निम्नलिखित तालिका में क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के रोजगार और मजदूरी के ब्यौरे दर्शाए गए हैं :-

सूचीबद्ध आंकड़े

क्र. सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	रोजगार	सं	100	98	101	103
2	मजदूरी	लाख रुपए	100	107	119	131

66. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार और मजदूरी में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि चूंकि भागीदार कंपनी बहु उत्पाद कंपनियां हैं इसलिए इन भापदंडों से रोजगार और मजदूरी पर संबद्ध वस्तु के आयातों के स्पष्ट प्रभाव का पता नहीं चल सकता है।

उत्पादकता

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की प्रतिदिन उत्पादकता में वृद्धि हुई है। तथापि, क्षति अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता लगभग समान रही है।

क्र. सं	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.	1,705	1,591	1,723	1,737
2	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.- सूचीबद्ध	100	95	100	99

वृद्धि

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2009-10 तक घरेलू उद्योग की वृद्धि सकारात्मक थी। तथापि, जांच अवधि के दौरान यह वृद्धि लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय के संबंध में नकारात्मक हो गई और जांच अवधि में मालसूची में प्रतिकूल प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई।

पाटन मार्जिन की मात्रा

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन काफी अधिक रहा है। पाटन मार्जिन में केवल न्यूनतम सीमा से लेकर अपितु अत्यधिक है।

क्षति के बारे में निष्कर्ष

70. अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न मापदंडों से सामूहिक और संचयी रूप से इस बात की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। हालांकि तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में क्षमता, उत्पादन और बिक्री जैसे मात्रात्मक मापदंडों में वृद्धि हुई है और इनमें आधार वर्ष की तुलना में समग्र वृद्धि हुई है परंतु भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में भी वृद्धि के अनुरूप इनमें बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। खास बात यह है कि जांच अवधि में स्पष्ट तौर पर सतत पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

71. मैं हैंगझोऊ झोग्सी रबड कंपनी लि. ने संक्षेप में ये तर्क दिए हैं कि:

- घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वृद्धिकारी प्रवृत्ति के कारण नगण्य आयातों से न तो कोई वास्तविक क्षति हुई है और न की घरेलू उद्योग और भारतीय उत्पादकों को निकट भविष्य में किसी प्रकार की वास्तविक क्षति होने की कोई संभावना है।
- क्षति रहित कीमत के तथ्यात्मक निर्धारण से इस तथ्य का पता चलेगा कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है और आयात की नगण्य मात्रा से घरेलू उद्योग को क्षति होने की कोई संभावना नहीं है।
- अप्रयुक्त क्षमताओं के बारे में घरेलू उद्योग के दावे की घरेलू उद्योग ने पुष्टि नहीं की है। निर्यातिक के पास कोई बेशी क्षमता नहीं है।
- एक्रीलिक फाइबर के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच में शुल्क समाप्त कर दिया गया था क्योंकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं पाई थी।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

72. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं:

पाटन और परिणामी क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच निम्नलिखित मापदंडों पर विचार करते हुए की जा सकती है:-

(क) पाटन जारी रहने की संभावना : संबद्ध देशों के निर्यातकों और उत्पादकों द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी पाटित कीमतों पर सामग्री का निर्यात जारी है। विगत में संबद्ध देशों से पाटन लगातार जारी रहने के कारण इस बात की उचित शंका है कि वर्तमान मामले में शुल्क समाप्त किए जाने से चीन जन गण और थाइलैंड से पाटन में निश्चित रूप से तेजी आएगी।

(ख) पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना : तीसरे देश से निर्यातों के संबंध में खासकर तथा जब वर्तमान अवधि में भारत को कोई निर्यात न हुआ हो अथवा निर्यातों की मात्रा कम हो, पाटन

की संभावना की जांच भी अन्य जांचकर्ता प्राधिकारियों द्वारा की जाती है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि: (क) ऐसी स्थिति में है जहां तीसरे देशों को निर्यात पाटित कीमतों पर किए जाते हैं। (ख) ऐसे निर्यातों की कीमत भारत को हुए निर्यात की कीमत से तुलनीय होती है। (ग) ऐसी कीमतों पर विचार करते हुए आयातों की पहुंच कीमत (i) बिक्री कीमत, (ii) क्षति रहित कीमत, (iii) घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम होती है, यह माना जाना चाहिए कि इन देशों के उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में सामग्री का पाटन किया जाएगा जिससे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

(ग) क्षति जारी रहने की संभावना: घरेलू उद्योग की स्थिति पहले से नाजुक है। संभावना यह है कि लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के अधीन घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार होगा।

(घ) क्षति की पुनरावृति होने की संभावना : ऐसा स्थिति में जहां घरेलू उद्योग को कोई सतत क्षति नहीं होती है, वहां प्राधिकारी के लिए लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना की जांच करना अपेक्षित होता है।

(ङ) वर्तमान पाटन मार्जिन का स्तर : पाटन मार्जिन काफी अधिक बना हुआ है। पूर्व में संपन्न जांचों में भी प्राधिकारी ने अत्यधिक पाटन मार्जिन पाया था और जांच का समापन संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को निरंतर जारी रखते हुए किया था।

(च) संबद्ध देशों के उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा अन्य देशों के बाजारों में पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है।

(छ) घरेलू उद्योग द्वारा जिस कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिक्री की जा रही है वह कीमत उस कीमत से अधिक है जिस पर संबद्ध देशों से कई अन्य देशों को सामग्री का निर्यात किया जा रहा है।

(ज) संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए संबद्ध देशों में बेशी क्षमताएं हैं। इसे संबद्ध देशों द्वारा रखी गई निर्यात की मात्रा के आधार पर चिन्हित किया जा सकता है। चीन जन गण के मामले में सच्चाई यह है कि रेडिएलाइजेशन तीव्र गति से हो रहा है और सरकार ने घरेलू बाजार के लिए संबद्ध वस्तु के विनिर्माण पर प्रतिबंध लगाया है, चीन जन गण और थाइलैंड के उत्पादकों के पास बेशी क्षमताएं पड़ी हुई हैं।

क्र.सं	कुल क्षमता	वार्षिक क्षमता (मिलियन नगों में)
1.	चीन जन.गण.	402.43
2.	थाइलैंड	34.12

(झ) चीन के उत्पादकों का निर्यात अभिमुखीकरण 30% से 100% के बीच है।

(ज) वर्तमान अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन (घरेलू उद्योग की स्थिति पहले से नाजुक है) को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि कम कीमत पर हुए किसी अत्यधिक आयात से घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति होगी। पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग की संभावित लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की स्थिति का हवाला देते हुए उस पर भरोसा किया गया है जिससे स्पष्टतः यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय धारे, निवेश पर नकारात्मक आय और नकारात्मक नकद प्रवाह का सामना करना पड़ेगा।

(ट) संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है। यदि वर्तमान पाटनरोधी शुलक समाप्त किया जाता है तो आयात अत्यंत लाभदायक बन जाएंगे और आयातों की मांग बढ़ जाएगी।

(ठ) आगे यह तर्क दिया गया है कि अधिक मांग और आयातों के साथ अब घरेलू उद्योग के पास निम्नलिखित विकल्प बचा है जो निम्नानुसार है :-

* सूचीबद्ध आंकड़े

क्र.सं	विवरण	इकाई	जांच अवधि (वर्तमान)	जांच अवधि
1	आयातों की पहुंच कीमत	रु./किग्रा.	124	124
2	बिक्री की लागत	रु./किग्रा.	***	***
3	बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	124
4	वर्तमान लाभ/हानि	रु./किग्रा.	(100) (5,061)	
5	घरेलू बिक्री पर ब्याज तथा कर पूर्व लाभ	लाख रुपए*	100 (2,324)	
6	घरेलू बिक्री पर नियोजित पूँजी पर आय	%*	100 (2,324)	
7	घरेलू बिक्री पर नकद लाभ	रु./भी.ट.*	100 (5,033)	

यदि घरेलू उद्योग पहुंच कीमत के साथ निवल बिक्री प्राप्ति की बराबरी करता है तो निम्नलिखित विश्लेषण से उस स्थिति में घरेलू उद्योग पर प्रभाव का पता चलता है यदि वह पहुंच कीमत के बराबर कीमत पर अपनी बिक्री करता है ।

घरेलू उद्योग ने अपनी बिक्री कीमत बनाए रखी : पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से अत्यधिक पाटन के साथ आयातों में और अधिक वृद्धि होने की संभावना है यदि घरेलू उद्योग अपनी कीमतों पर कायम रहता है तो उपभोक्ता चीन की वस्तु की ओर उन्मुख होंगे क्योंकि वह सस्ती है । इससे घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आएगी और परिणामतः बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी जाएगी जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी ।

संभावित प्रभाव को निम्नलिखित से देखा जा सकता है :

क्र.सं.	विवरण	इकाई	जांच अवधि (वर्तमान)	जांच अवधि*
1	बाजार हिस्सा			
क	घरेलू उद्योग	%	70.93	0.00
ख	संबद्ध देशों से आयात	%	0.36	100.00
2	घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा	मी.ट.	526,854	-
3	घरेलू उद्योग का उत्पादन	मी.ट.	571,051	-

अतः यह देखा जाएगा कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और क्षति की संभावना है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

73. जैसा कि ऊपर नोट किया गया है, घरेलू उद्योग की लाभप्रदता नकारात्मक बन गई है जो कि स्पष्टतः भारतीय बाजार में पाटित आयातों (भले ही इनकी मात्रा कम है परंतु यह मात्रा अधिक है) की मौजूदगी के कारण है । यह संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत में हुई वृद्धि को दूसरों पर डालने में समर्थ नहीं रहा है जैसा कि वह पाटित आयातों के अभाव में कर सकता था । अतः घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है अतः शुल्क समाप्त किए जाने से न केवल "क्षति" जारी रहने अपितु संबद्ध वस्तु के बारे में घरेलू उद्योग का निष्पादन भी खराब रहने की संभावना है ।

ट. कारणात्मक संबंध

हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

74. मै. हेंगझोऊ जोंगसी रबड़ कंपनी लि. ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता का व्यवहार आयातों की मात्रा/कीमत से स्वतंत्र है। हालांकि आयातों की लाभप्रदता में कमी आई है, तथापि, आयातों की मात्रा में गिरावट आई है।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

75. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं:

- पूर्ववर्ती जांचों में कारणात्मक संबंध के पहले ही पुष्टि की जा चुकी है। वर्तमान समीक्षा जांच में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति जारी रहेगी या उसकी पुनरावृति होगी। इस जांच में कि क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृति होने की संभावना है, ऐसा विश्लेषण शामिल होता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर ही ऐसा सकारात्मक परिणाम दर्ज किया जाएगा जिससे क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृति होने की संभावना बनेबी। क्षति का कोई सकारात्मक परिणाम तभी दर्ज किया जाएगा जब पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने और क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृति होने के बीच कोई संबंध होगा। उपर्युक्त उपबंध में तथा उल्लिखित "अन्य कारकों" में से किसी से भी घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।
- घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि एक बार यह प्रदर्शित होने के बाद कि :
 - (क) अनुबंध-2 के पैरा (ii) के अंतर्गत पाटित आयातों का मात्रात्मक और कीमत प्रभाव है,
 - (ख) पाटित आयातों द्वारा हुई क्षति के प्रभाव अनुबंध-2 के पैरा (iv) में निर्धारित मापदंडों के अनुसार प्रदर्शित होते हैं। तत्पश्चात एक ही आधार ऐसा बचता है जिसके अनुसार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है जो कारणेतर विश्लेषण अर्थात् उन अन्य कारकों की वजह से क्षति हुई है जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में प्रदर्शित किया गया है कि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से यह सिद्ध नहीं होता है कि किन अन्य कारकों के कारण क्षति हुई है। ऐसा मामला होने के कारण एकमात्र प्रकाट्य निष्कर्ष यह निकलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति संबंधित देशों के पाटित आयातों के कारण हुई है।
 - घरेलू उद्योग ने आगे यह अनुरोध किया है कि मामले के मापदंडों से कारणात्मक संबंध का पता चलता है :

क. पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती होने की संभावना है ।

ख. पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में अत्यधिक कीमत कटौती की मौजूदगी के कारण इस उत्पाद की अत्यधिक कीमत प्रतिस्पर्धाताम्कता के महेनजर उपभोक्ताओं द्वारा आयातित सामग्री की ओर रुख किए जाने की संभावना है ।

ग. घरेलू उद्योग की कीमतों की तुलना में संबद्ध देशों से शुल्क प्रदत्त आयातित कीमत काफी अधिक होगी । चूंकि घरेलू उद्योग की कीमत में आयातों के कारण कटौती होगी इसलिए आयातित उत्पाद की मांग होने की संभावना है ।

घ. यदि शुल्क को समाप्त करने की अनुमति दी जाती है और परिणामतः संबद्ध देशों से आयात में वृद्धि होती है तो घरेलू उद्योग संबद्ध उत्पाद की कीमत में भारी कटौती करने के लिए बाध्य होगा ।

ड. यदि घरेलू उद्योग कीमतें कम करने के लिए बाध्य होता है तो उसका स्वाभाविक प्रभाव घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर पड़ेगा । लाभ में गिरावट के कारण नकद प्रवाह और निवेश पर आय में कमी आएगी ।

च. यदि घरेलू उद्योग अपने सामान्य कीमत स्तर बनाए रखता है तो उसे अपनी बिक्री मात्रा गंवाने की संभावना है क्योंकि उपभोक्ता उत्तरोत्तर आयातों का सहारा लेंगे ।

छ. यदि संबद्ध देशों के निर्यातक अत्यधिक बेशी क्षमताएं रखते हैं तो इसका अर्थ यह निकलता है कि मात्रा में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने के साथ ही भारी वृद्धि होगी ।

ज. यदि घरेलू उद्योग बिक्री मात्रा गंवाता है तो उसे भारी क्षति होगीग । चूंकि बिक्री मात्रा में गिरावट से मालसूची का स्तर बढ़ेगा, इसलिए उत्पादन, क्षमता उपयोग और लाभप्रदता में गिरावट आएगी ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

76. प्राधिकारी ने किसी निर्णयक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध के महत्व और प्रासंगिकता के बारे में किए गए अनुरोधों की जांच की है । धारा 9 क(5) के अंतर्गत यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि प्राधिकारी के लिए पाटन और क्षति की संभावना तथा शुल्क जारी रखने की जरूरत जांच की

क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन:-

77. प्राधिकारी के निर्धारण के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु जाच अवधि के दौरान नियांतों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। इस प्रकार की तुलना से क्षति मार्जिन निम्नानुसार बनता है:

क्र.सं.	देश	एन आई पी	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन
		अम.डॉ./किग्रा.	अम.डॉ./किग्रा.	अम.डॉ./किग्रा. (%) रेंज
1	चीन जन.गण.			
	मै. हेंगझाऊँ झोंग्सी रबड कं. लि.,	***	***	*** 25-35
	अन्य	***	***	*** 30-40
2	थाइलैंड	***	***	*** 15-25

ज. निष्कर्ष

78. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा उपर्युक्त जाच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और पाटन तथा परिणामी क्षति जारी रहने की स्थिति और पाटन तथा क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही है और पाटन मार्जिन काफी अधिक है। यह भी देखा गया है कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद भारत को पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का नियांत जारी है। आगे यह नोट किया जाता है कि कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री काफी अधिक है। यदि घरेलू उद्योग इसकी बराबरी करने का प्रयास करेगा तो इसका कीमत मापदंडों पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। विकल्पतः इससे मात्रात्मक मापदंडों पर प्रभाव पड़ेगा। अतः घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने की संभावना है और वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में इसकी हालत और खराब होने की संभावना है। अतः रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार पाटनरोधी शुल्क की अवधि बढ़ाने और उसमें संशोधन करने की आवश्यकता है।

झ. सिफारिशें

79. यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि संबद्ध वस्तु का निर्यात पाठित कीमतों पर जारी है, वर्तमान पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन से लागू पाटनरोधी शुल्क में संशोधन की जरूरत की पुष्टि होती है, घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई है तथा शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से पाटन तथा आयातों के कारण क्षति जारी रहने की संभावना है। अतः प्राधिकारी का मत यह है कि इस उपाय में विस्तार करना अपेक्षित है और निम्नलिखित शुल्क तालिका में विनिर्दिष्ट किए गए अनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की मात्रा में संशोधन अपेक्षित है। क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है।

80. तदनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के समस्त आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लागू करने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

शीर्ष / उपशीर्ष	वस्तु विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातिक	शुल्क राशि	इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	
1.	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	थाईलैंड	थाईलैंड	कोई	कोई	0.86	किंग्रा. अम.डॉ.
2.	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	थाईलैंड	थाईलैंड से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	0.86	किंग्रा. अम.डॉ.
3	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब	उन देशों से इतर अन्य कोई देश जिन पर पाटनरोधी	थाईलैंड	कोई	कोई	0.86	किंग्रा. अम.डॉ.

		और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	शुल्क लागू है						
4.	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियो/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	मे. हेंगझोऊ झोंगसी रबड कंपनी लि.	मे. हेंगझोऊ झोंगसी रबड कंपनी लि.	1.12	किग्रा.	अम.डॉ.
5.	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियो/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई उपर्युक्त क्र.सं. 4 सहित	कोई	1.31	किग्रा.	अम.डॉ.
6.	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियो/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई उपर्युक्त क्र.सं. 4 सहित	1.31	किग्रा.	अम.डॉ.
7	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियो/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	1.31	किग्रा.	अम.डॉ.

8	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण.	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	1.31	किंगा	अम.डॉ.
9	40112090 , 40131020 एवं 40129049	बसों तथा लारियों/ट्रकों में प्रयुक्त 16" से अधिक के सामान्य रिम व्यास कोड वाले ट्यूब और/अथवा रबड़ फ्लैप सहित या रहित नए/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल बॉयस टॉर, ट्यूब एवं फ्लैप्स	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई देश	चीन जन.गण.	कोई	कोई	1.31	किंगा	अम.डॉ.

81. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3,3 , 8 1, 9 और 9 के अंतर्गत लागू शुल्क को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल हैं;

82. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 2nd August, 2012

Subject: - Sunset Review of anti-dumping duty imposed concerning imports of 'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks' originating in or exported from China PR and Thailand - Final Findings.

A. BACKGROUND

No.15/35/2010-DGAD: –Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (herein after referred to as the AD Rules), the definitive anti-dumping duty was originally recommended vide notification No. File No. 14/09/2005-DGAD dated 29th June 2007 on import of 'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks' (hereinafter referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR and Thailand (hereinafter referred to as the subject countries).

2. And whereas upon a Mid-term Review undertaken by the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), the Authority recommended continuation and modification of definitive Anti-dumping duty vide its notification No. 15/1/2009 - DGAD dated 26th August 2010 and whereas the Central Government issued its Notification No.117/2010 – Customs dated 18th November 2010.
3. Whereas Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) on behalf of the domestic industry represented by M/s Apollo Tyre Ltd., M/s J.K. Tyres & Industries Ltd., CEAT Ltd. and M/s MRF Ltd. have filed a duly substantiated application in accordance with the Act and the AD Rules before the Authority alleging dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries and requested for review and continuation of the anti-dumping duties.
4. In view of the duly substantiated application filed on behalf of the domestic industry and in accordance with Section 9 A (5) of the Act, read with Rule 23 of the AD Rules, the Authority initiated a Sunset review investigation dated 3rd August 2011 to review the need for continued imposition of the duties in force in respect of the subject goods

originating in or exported from the subject countries and to examine whether the expiry of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

B. PROCEDURE

5. In this proceeding, the procedure described herein-below has been followed:

- i. The Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.
- ii. The Authority sent copies of initiation notification dated 3rd August 2011 to the Embassies of the subject countries, known exporters/producers from the subject countries, known importers and other interested parties, and the domestic producers, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file the questionnaires' responses and make their views known in writing within the prescribed time limit. Copies of the letter and questionnaires sent to the exporters/producers were also sent to the Embassies of the subject countries along with a list of known exporters / producers with a request to advise the exporters/ producers from the subject countries to respond to the questionnaires within the prescribed time.
- iii. Questionnaires were sent to the following known exporters/producers from the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information:

S.N.	Company's Name
1.	M/s Qingdao Rubber (Group) Co. Ltd.
2.	M/s Shanghai Tyre & Rubber Co.
3.	M/s Aeolus Tyre Co. Ltd.
4.	M/s Quingdao Monolith OTR Tire Co. Ltd.
5.	M/s Yokohama Tire Manufacturing (Thailand) Company,
6.	M/s Thai Bridgestone Co. Ltd.,
7.	M/s Otani Tire Co. Ltd
8.	M/s Michelin Siam Co, Ltd

In response thereto, M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd. an exporter/producer from China PR has filed the questionnaires' response.

M/s. Yokohama Tire Manufacturing (Thailand). Co. Ltd, Thailand has stated that they have not exported the subject goods during the POI.

- iv. Questionnaires were sent to the following known domestic producers, importers, users and associations of the subject goods in India seeking necessary information:

S.N.	Company's Name
1.	M/s Radials International,
2.	M/s Kartar Tyre House
3.	M/s Kaks & Bills Pvt. Ltd.
4.	M/s Rana Tyres
5.	M/s Sunny International
6.	M/s Aman International
7.	M/s Vikas Road Carriers Ltd
8.	M/s AAA Impex,
9.	M/s Apollo Tyres Ltd.
10.	M/s MRF Ltd.,
11.	CEAT Ltd
12.	M/s JK Tyres & Industries,
13.	M/s Balkrishna Industries Ltd.
14.	M/s Malhotra Rubbers Limited
15.	M/s Tyre Corporation of India Ltd.,
16.	M/s Dunlop Tyres
17.	M/s Wearwell Tyres & Tubes Pvt. Ltd.
18.	M/s Modi Tyres Co. Pvt. Ltd.
19.	M/s Birla Tyres Shivam Chambers,
20.	M/s Bridgestone India Private Limited
21.	M/s Goodyear India Ltd
22.	M/s Falcon Tyres Ltd.

S.N.	Association's/Other's Name
1.	All India Motor Transport Congress.
2	Society of Indian Automobiles Manufacturers

- v. In response to the initiation notification, the following interested parties have filed responses:

1. All India Confederation of Goods, Vehicle Owners' Association, New Delhi-110005
 2. All India Tyre Dealers' Federation, Delhi.
 3. Automotive Tyre Manufacturers' Association represented by Apollo Tyres, JK Tyres & Industries Ltd., CEAT Ltd, and MRF Ltd.
 4. Falcon Tyres Ltd, Mysore.
- vi. The imports data for the period of investigation and preceding three years was called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S).
- vii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- viii. The Authority has examined the information furnished by the domestic producers to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to analyze the likelihood of continuation/recurrence of injury and to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- ix. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 16th May 2012. The parties which presented their views in the public hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The arguments made in the written submissions received from the interested parties have been considered, wherever found relevant, in these final findings.
- x. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review is 1st April 2010 to 31st March 2011 (12 months). However, injury analysis shall cover the years 2007-08, 2008-09, 2009-10 & POI.
- xi. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the domestic producers and the co-operative exporter/producer from China PR.
- xii. In accordance with the Rule 16 of the AD Rules, the essential facts under consideration before the Authority in the instant investigation have been disclosed to the known interested parties. The comments received on the disclosure statement, to the extent considered relevant, have been considered in these findings.

- xiii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xiv. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the 'facts available'.
- xv. *** in these findings represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

C. Post-Disclosure statement submissions made by interested parties and the Examination thereof

M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd

6. The following submissions, in brief, have been made by M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd China PR, in response to the Disclosure statement:

- The Authority has not undertaken objective determination of the exporter's submissions' pertaining to injury.
- It has referred to the financial performance of the domestic industry and stated that the revenue from truck and bus tyre aggregates 60-70% of the total sales turnover. JK tyres has a revenue contribution more than average from the truck and bus tyre segment. More than 50% of the revenues of the domestic industry come from Truck/ Bus Bias Tyres segment only.
- In the normal value calculation, the Authority has not mentioned about which prices, average prices taken during POI or the prices prevailing during the period of exports.
- The domestic industry has sought 22% returns on investments for the calculations of NIP. But the industry is highly competitive and the rates of return of top German Tyres manufacturer and world's fourth largest tyre manufacturing company is around 11%.
- The Authority has admitted that imports from China PR have come down from 10770 during 2007-08 to 2171 during the POI but the domestic industry has been able to increase its production and sales from 558836 MT during 2007-08 to

571051 MT during the POI and Sales from 499477 MT during 2007-08 to 526854 during the POI. As such it is clear that imports are going down and the domestic industry has been able increase its production and sales and having no adverse volume effect.

- The price underselling is on account of excessive rate of return on investments assumed by the Authority.
- The Authority has accepted the change in the capacity utilization because of change in product mix on one hand, on the other hand it stated that for continued dumping has prevented growth in production, capacity utilization and sales volume”, as such examination in this regard is incorrect.
- The Authority has not examined the reasons of such sharp decline profitability parameters. It has also not been mentioned that such a sharp decline is on account of alleged dumping.
- There exist no causal relationship between the profitability of the domestic industry and the import of the subject goods. Injury to the domestic industry, whatsoever is on account of factors other than dumping.
- The Authority has not examined as to why the domestic industry failed to increase its prices consequent on the increase in the prices of raw material. As stated above, we have already submitted the reasons of the same. But, the same have not examined by the authority. Domestic industry has failed to increase its sales prices because highly competitive domestic market and not because of alleged dumping.
- The Authority has not examined the reasons for change in the inventories. Inventories should and be compared in relation to the sales only
- The Authority has held that productivity of the domestic industry has declined; on the contrary the productivity per day of the domestic industry has increased during the POI as compared to the base year.

Likelihood of continuation or recurrence of dumping:

- Evidence on surplus capacities i.e. the Global Tyre Report from European Rubber Journal has not been filed in the NCV version; therefore, it needs to be disregarded.
- The contention of the domestic industry that Government in China has imposed restriction on the manufacturing of the subject goods in domestic market is without any basis
- Significant imports as mentioned by the Authority needs to be determined in relation to the volume of production/ sales and demand of the subject goods.
- The imports from China have no relationship whatsoever with the profitability of the domestic industry.
- The domestic industry has itself admitted that the fluctuations in the profitability has been on account of the fluctuations in the raw material prices and the decline in the profits has been on account of the too steep increase in natural rubber and other input prices. And the increase in the input prices was too steep and could not be fully passed onto the consumers. Therefore, examination of the Authority in this regard that the domestic industry has continued to suffer material injury due to the presence of dumped imports of the subject goods from the subject countries despite anti dumping duty in force is incorrect.

- Existence of dumping is not the sufficient condition for recommendation of continuation of the anti dumping duty, dumping is not actionable per se unless it causes injury to the domestic industry. Objective examination of the factors as discussed above is required to be undertaken together with likelihood analysis by DGAD.
- In the case of Acrylic Fibre from Italy, DGAD recommended discontinuation of anti dumping duties inspite of finding that there was intensifying dumping from Italy. Similar situation exist in the present case also, where all parameter show significant improvement in performance. The domestic industry has not been able to support their claim that subject countries have excess capacities.

Causal Link:

- Variation in the prices of subject goods from other countries is primarily on account the superior quality being imported from European suppliers.
- There is very significant shift of demand from Bias tyres to Radialisation and it is also beyond the anticipation of the domestic industry.
- As regard the issue of change in pattern of consumption, it was contended that in the reports of domestic companies it has been clearly mentioned that radialisation is catching fast and as such bias tyres capacities have started getting surplus in India.
- The domestic industry wishes to create a oligopolistic situation by eliminating international competition. Once, anti dumping duties are continued again, the customer will have no option, but to buy the subject goods at the price dictated by the cartel of the domestic producers.
- Tyres are shifting fast to radial technology from Bias Tyres. All companies heavily investing in radial tyres only. Growth in radial tyres is much more than in Bias tyres. The submissions of the interested party in this regard have not been considered by the Authority.

Domestic industry

7. The following submissions, in brief, have been made by Domestic industry in response to the Disclosure statement:

- AITDF does not fall within the definition of interested party under rule 2(d). AITDF has not provided sufficient evidence with respect to their representativity.
- It submits that the antidumping duty may be imposed only as fixed quantum of anti dumping duty (fixed form of duty).
- Domestic industry submits that the duty should be imposed in terms of US\$ only.
- Imports of product under consideration have declined after imposition of antidumping duties. However, volume of imports is still quite significant to establish the likely prices and to show the likelihood of dumping and injury in the event of cessation of anti dumping duties.
- Imports are causing significant price undercutting without addition of prevailing anti dumping duty. The volume of imports is therefore like to surge with cessation of anti dumping duty.

- The industry and thereafter come to a conclusion based on such verified information. There is no contradiction between the claims made in the petition and public statements. However, annual report concerns business operations of the companies for (a) all the products (b) all the markets (c) for the accounting year. By the contrast, the information provided to the Authority concerns (a) Designated Authority has verified the information filed by the domestic industry in respect of Product under consideration (b) for the domestic market alone, (c) for the investigation period and preceding years. Therefore, the allegation is devoid of facts.

Reference duty

- It has also been contended that a reference price duty may be levied as it would assuage the domestic industry's injury, if any.

Examination by the Authority

- The submissions made by the interested parties post-Disclosure statement have been examined as follows and in the relevant sections of these findings:

- As regards the contention that the Authority has not undertaken objective determination of the exporter's submissions' pertaining to injury; the Authority notes that all issues raised by the exporter that were considered pertinent to this investigation have been adequately examined and addressed by the Authority.
- The Authority notes that none of the exporters/producers from the subject countries have cooperated in this investigation. It was therefore constrained to construct the Normal value considering the international prices of major raw materials such as natural rubber and carbon black for the POI as per the data available in the World Trade Atlas. As regards other materials, since the average international prices were noted to be abnormally high, hence the rate of efficient domestic industry has been adopted. Besides, the consumption factor and conversion cost of most efficient domestic industry have been adopted and a reasonable profit margin of 5% has been considered.
- As regards the contention that imports are going down and the domestic industry has been able increase its production and sales and having no adverse volume effect; the Authority notes that the present investigation is Sunset review investigation and therefore the Authority is required to consider likelihood of continuation and recurrence of dumping and injury. The volume of dumped imports during the POI were relatively less but significant enough. These also indicate the trend in which the imports are likely to be reported in the event of cessation of the antidumping duty. The investigation has established that the import price from the subject countries were significantly below the selling price, cost of production and non injurious price of the domestic industry. Thus, cessation of anti dumping duty is likely to lead to 'injury' to the domestic industry. The domestic industry has claimed that it would be forced to sell the product much below its cost of production in case it was to matching the dumped imports prices. Besides, considering significant disposal production capacities, it

is likely that significant imports of the subject goods are likely to come into India at dumped prices in the event of cessation of antidumping duty.

- It is noted that the Landed prices of the subject goods into India from China PR and Thailand has been lower than the NIP determined for the domestic industry resulting in price underselling.
- With regard to decline in the capacity utilisation; the Authority notes that while some change in the capacity utilisation could be due to product mix, the capacity utilisation of the domestic industry shows a decline.
- As regards reasons for decline in the profits; the Authority notes that while some decline in profits is apparently due to increase in the raw materials prices, but it is also seen that the landed price of imports have been significantly below the selling price of the domestic industry, which would also not allow it to increase the prices of the subject goods. Thus, it cannot be stated that the presence of dumped imports have not had any impact on the selling price of the domestic industry.
- It is further noted that the landed price of imports is significantly below the cost of production of the domestic industry. Thus, the performance of the domestic industry is likely to worsen in the event of cessation of anti dumping duty.
- As regards the contention that there is no causal relationship between the profitability of the domestic industry and the import of the subject goods; the Authority notes that the present investigation is a Sunset review investigation and the Authority is required to assess likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The investigation has shown that the performance of the domestic industry would worsen in case the present anti dumping duties cease, as significant price undercutting and price underselling has been noted on one hand and significant freely disposable production capacities within the subject countries on the other hand.
- As regards the contention that the domestic industry has not been able to increase its prices in view of domestic competition, the Authority notes that existence of domestic competition is a normal business phenomenon and has existed throughout the injury period. Further, the landed price of imports was significantly lower than selling price of the domestic industry. In any case, the profitability of the domestic industry is likely to further deteriorate should the domestic industry be forced to reduce its prices in competition to the dumped imports prices, in the event of cessation of anti dumping duty.
- It is noted that the Authority has not held that the productivity of the domestic industry has declined. The submission of the interested parties, therefore, is without any basis.
- As regards placing evidence on surplus capacities in public domain, the Authority notes that the evidence in fact has been disclosed by the domestic industry on non confidential basis and a copy thereof is kept in the public file.

- It is noted that the subject countries have significant capacities for producing the subject goods. Besides, in case of China PR, radialisation is in rapid progress and the Government has apparently imposed restriction on the manufacturing of the subject goods for domestic market (as per the Annexure 2B and 3B of the Accession treaty).
- The Authority agrees with the views of the exporter that dumping per se is not actionable. The Authority, however, notes that the cessation of anti dumping duty is likely to lead to continuation of 'injury' to the domestic industry.
- With regard to reference to other investigations, the Authority notes that each case has a particular set of facts. The factual matrix of the present case establishes likelihood of continuation of dumping and injury in the event of cessation of anti dumping duty. Besides, it has not been shown by the interested parties that the factual matrix in the present case is similar to those cases where the anti dumping duty has been discontinued.
- With regard to difference in quality of product being imported from China PR and third countries: the Authority observes that there is no quantified claim that the quality of tyres supplied from third countries and China is so different as to justify the price difference. In any case, an adjustment on that account could have been sought by the interested party after having demonstrated the quality difference.
- As regards increase in radialisation; the Authority notes that while radialisation is increasing, the evidence on record shows that the demand for the product under consideration has not suffered a significant deterioration.
- The Authority notes that the interested parties have made self-contradictory submissions. As they have stated on one hand that the domestic industry is creating oligopoly; while at the same time they have argued that the domestic industry profitability has suffered due to internal competition. In any case, the Authority notes that the purpose of antidumping duty is to eliminate dumping practices and create fair market situation.
- As regards the form of duty is concerned, the Authority notes that the form of duty was recommended as the reference duty in the original investigation vide final findings of 29th June 2007. However, in a midterm review examination, the form of duty, considering the facts & merits of the case, was modified to fixed form vide findings of 26th August, 2010. The Authority has taken note of the facts of the case and finds no merit on record, to modify the fixed form of duty as was recommended in the mid-term review investigation and considers that the fixed form of duty would be appropriate in the instant matter as well.

D. Misc. submissions made by interested parties and the Examination thereof

Submissions made by AITDF

- AITDF is registered as a life member with Confederation of All India Traders (CIAT). CIAT is the largest and single body enrolling trading community. AITDF is

headquartered in Delhi and its working is divided into five zones. The office of convenor, AITDF only works as Secretariat located in the premises of Delhi Tyre Dealers and its financing and other support at Head Quarter level is borne by the Delhi Tyre Dealers Association, while Zonal chapters meet their expenses at their own accord.

- The Authority may depute its officials to visit the market to gather Sunset case related information and AITDF and its constituents shall fully assist the Anti-Dumping Authority.
- Director General -Investigation, Competition Commission of India (CCI) has held Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) guilty of forming cartel by acting in concert in violation of section 3 (3) (a) and 3(3)(b) of the Competition Act 2002 vide DG-CCI report dated May 25, 2011.
- The Appellate Tribunal on Import of radial truck bus tyres has set-aside the findings of DA, subsequently Ministry of Finance issued Notification 2010/ 10 dated 19.02.2010. It augments the view of AITDF that unfair restriction having been imposed on import of truck bus tyres by the DA. This also applies to Sunset review of import of non radial truck and bus tyres from China PR and Thailand. AITDF challenged that the demand of ATMA and its members wanting levy of Safeguard duty on import of passenger car tyres for China PR was unfair, unreasonable and untenable as it was no way causing any injury whatsoever, in whatsoever form to the domestic industry. The Director General, Safeguards duties on 25th Sept. 2009 has terminated the plea of domestic tyre industry and has not imposed Safeguard duties. Hence, it proves that ATMA and its members are in habit of seeking tariff and non-tariff restrictions on import of tyres.
- The Tariff Commission, Ministry of Commerce and Industry, which investigated the pricing structure and behaviour of domestic tyre industry, by the AITDF dated 19.11.2011 confirms that AITDF has always assisted orally and in writing to all the agencies / departments / forum in their effort regarding any proceedings and examination of domestic tyre industry. The tariff commission has submitted its Report on tyre pricing investigation in January 2012 to the department of industrial policy and promotion (DIPP) and understood to have stated that price hikes indulged into by domestic tyre majors till 2011-12 from 2005-06 were "*abnormal*".
- AITDF had complained that investigating officials in 2006 and 2007 at the outset of the investigation stated that tyre dealers had no stake in this case of imposition of anti-dumping duty. Although, AITDF invited the investigating officials to the market and displayed that the difference existed between the truck / bus bias ply tyres imported from China PR in terms of tread depth, design over all dia, minimum overall dia and maximum overall dia along with overall width in comparison to domestic tyres of same size predominantly 10.00 -20 16 PR . Both the types of tyres were displayed to them but they failed to register our views in the final report which seems deliberate. The imported tyres and domestic tyres were practically and provably 'Apple &

'Oranges', import quantity was minuscule in comparison to domestic sales, yet the anti-dumping duty was recommended.

Submissions made by M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd China PR

9. M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd. China PR. in brief, has submitted as follows:

- a. In India, the level of radialisation is between 10-20% and is growing rapidly. The radial tyre market is expected to touch the 35% mark and in the process acquire a substantial share of the bias tyre market.
- b. In various sunset review investigations, the Authority has discontinued the duties on various grounds.

Submissions made by the Domestic industry

10. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- a. The domestic industry has strongly objected to the participation of AITDF. It has argued that AITDF does not fall in the definition of interested party under rule 2(d) and has further contended that AITDF should be directed to give evidence of its representativeness in detail before their submissions are considered. It has further stated that any party other than a *bona fide* interested party should not be allowed to participate in the present investigations, without establishing their credentials as an interested party. The domestic industry has also referred to orders of the CESTAT arising out of original investigations relating to this case and has submitted that no party other than interested party should be allowed to participate in the present investigations.
- b. Responding to the submissions of other interested parties with regard to disclosure of information, it has submitted that it has disclosed all relevant information to the extent the same is publicly disclosed by them and is not commercially sensitive.

It has further contended that:

- a. The submissions of AITDF with regard to enquiry by Competition Commission of India is irrelevant to the present investigation.
- b. ATMA has been repeatedly taking objections regarding participation of AITDF.
- c. The argument regarding termination of Safeguard duties on passenger car tyres by the Director General, Safeguards is wholly irrelevant to the present investigation.
- d. There are number of final findings issued by the Designated Authority in Sunset reviews, wherein the Designated Authority has extended anti dumping duty on

- the grounds of (a) significant price undercutting, (b) significant injury margin in respect of imports during the investigation period, (c) significant surplus capacities, (d) significant exports from China to global countries.
- e. The law and the facts are materially different in the present case and TBR cases and thus the two cases cannot be compared. The decision of CESTAT in TBR case is wholly irrelevant to the present case.
 - f. The claims of AITDF with regard to report of Tariff Commission is also factually incorrect. Tariff Commission has in fact concluded that the tyre price increases were in response to increase in the cost of production.

Examination by the Authority

11. The misc. issues raised by the interested parties have been examined as follows:

- As regards the issue of level of radialisation is concerned; the Authority notes that while radialisation is gradually taking place but there remains a significant demand for the subject goods and is likely to remain in the near future as well.
- The Authority further notes that the recommendations as regards the continuation or otherwise of the anti-dumping duties in force are made on merits of each case.
 - As regards the issue that the Authority may depute its officials to visit the market to gather related information; the Authority notes that all interested parties are expected to file case-pertinent information in a given case with appropriate evidence to substantiate their submissions. AITDF has not substantiated its contentions except that its views have been taken on board by many Govt. agencies. /organisations. The Authority further notes that the definition of 'interested party' is an inclusive definition and thus views of any interested party are to be considered provided these are germane to the issues involved in an anti-dumping investigation. AIDTF has referred to the report of Competition Commission; findings of Hon'ble Tribunal (CESTAT) and the DG (Safeguards) action. However, the Authority notes that there are competent bodies set up to address the issues of cartelisation, injury on account of surge in imports etc. Besides, the Authority acts in terms of the AD rules & regulations on the subject and takes into cognizance all pertinent issues made before it by the interested parties and based on facts available on record makes its appropriate determination and recommendations.

E. Product under consideration and Like article

Submissions made by the Domestic industry

12. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- a. The product under consideration is "new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia. code above 16" used in buses and lorries/trucks"

- b. The scope of investigation includes such non-radial bias tyres, tubes and flaps used in buses and lorries (including trucks) whether imported individually and/or in any combination thereof.
- c. There is no difference in the product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject countries.
- d. In the previous investigation, the Authority adopted weight of tyres as an appropriate parameter for the purpose of anti-dumping investigations and the same should be followed in the present case as well.

Submissions made by AITDF

13. AITDF has contended that the imported subject goods are not comparable to the goods being manufactured by the domestic industry and that the Authority may depute its officials to visit the market to gather Sunset case related information and AITDF and its constituents shall fully assist the Anti-Dumping Authority.

Examination by the Authority

Product under consideration and Like Article

14. The product involved in the original investigation and mid-term review investigation was 'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks' originating in or exported from China PR and Thailand. It is further noted that the scope of investigation included such non-radial bias tyres, tubes and flaps used in buses and lorries (including trucks) whether imported individually and/or in any combination thereof.
15. Tyres are broadly produced in two types, namely radial and non-radial. Radial Tyres used in buses and lorries with or without tubes and flaps are beyond the scope of the present investigation. The tyres, the tubes and the flaps are produced separately; however, they are invariably used together in automotive applications. The tyres are classified in Chapter 40 under Customs sub-heading no. 40112090 and the tubes and the flaps are classified under sub-heading nos. 40131020 and 40129049 respectively. However, Customs classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of investigation.
16. Present review investigation being a Sunset review investigation, product under consideration remains the same as has been defined in the previous investigations.
17. As regards the contention of AITDF that the imported subject goods are not comparable to the goods being manufactured by the domestic industry; the Authority notes that the contention has not been substantiated. Besides, it is not the practice of the Authority to go out in the market for collecting evidences. In any case, as the analysis on the present case has been undertaken on weight of the subject goods; differences, if any, on account of dia, width etc, would automatically be taken care of in such an analysis.

18. The Applicant has claimed that there is no known difference in the goods produced by the Indian industry and the subject goods exported from the subject countries to India and that the goods produced by the Indian industry and the subject goods imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Thus, the goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from the subject countries are being treated as like articles in accordance with the AD Rules.

F. Scope of the Domestic Industry

Submissions made by the Domestic industry

19. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- a. The present review petition has been filed by the Automotive Tyres Manufacturers Association on behalf of M/s Apollo Tyres Ltd., M/s J.K. Tyre & Industries Ltd., CEAT Ltd. and M/s MRF Ltd. and supported by M/s Birla Tyres.
- b. Production by these four ATMA members is above 50% of total Indian production of the subject product. M/s Birla Tyres have specifically supported the petition. Further, in case of sunset review, standing is not mandatory.
- c. The participating companies constitute domestic industry within the meaning of the Rules.

Examination by the authority

20. Rule 2(b) under the AD Rules provides as follows:-

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'Domestic Industry' may be construed as referring to the rest of the producers.

21. The application seeking review and continuation of the anti-dumping duties has been filed by Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) on behalf of the domestic industry represented by M/s Apollo Tyre Ltd., M/s J.K. Tyres & Industries Ltd., CEAT Ltd. and M/s MRF Ltd. The application is supported by M/s Birla Tyres. The Applicant has claimed that production by the participating domestic producers of the subject goods represent over 50% of the total production of the subject goods in India. As per information available on record, the participating domestic producers along with the supporter account for a major proportion of the total Indian production of the subject goods.

22. It is further noted that M/s. CEAT Limited has itself imported *** MT of the subject goods from Sri Lanka during the POI viz. 1st April 2010 till 31st March 2011. It has been contended by them that imports of only a few models as they have limited production capacities in India. Besides, these imports have been made at relatively higher prices. It is noted that M/s CEAT Limited has not abdicated its role of a domestic producer of the subject goods. Thus, M/s. CEAT Limited is not required to be excluded from the ambit and scope of the domestic industry in terms of the AD Rules. Thus, M/s Apollo Tyre Ltd., M/s J.K. Tyres & Industries Ltd., CEAT Ltd. and M/s MRF Ltd. constitute domestic industry in terms of the AD Rules.

23. Notwithstanding the above, even if M/s. CEAT Limited were to be excluded from the ambit and scope of the domestic industry in terms of Rule 2(b) of the AD Rules because of the imports effected by it; M/s Apollo Tyre Ltd., M/s J.K. Tyres & Industries Ltd. and M/s MRF Ltd. account for a major proportion of the total domestic production and thus would constitute as the domestic industry in terms of the AD Rules.

G. Dumping Determination

Submissions made by the Domestic Industry

24. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- Normal value in case of China must be determined in accordance with para-7 of Annexure-I. None of the Chinese producers have claimed with verifiable evidence that they are entitled to market economy treatment. Costs on account of raw materials constitute majority proportion in the total cost of production. Approximately 70% of the costs is on account of the raw materials, which is pertinent in determining the market economy status of the Chinese companies. In various anti dumping cases concerning these raw materials, MET treatment has not been granted to the Chinese companies. This reflects that that the raw material prices in China do not reflect the market values. The Chinese tyre industry was substantially State owned/controlled. Rubber is a major input in the production of the product under consideration. There are a number of restrictions on the Chinese producers so far as rubber is concerned. Such being the case, no Chinese company can establish that it is entitled for the market economy status. There is a restriction on the imports of various types of tyres in China. This indicates that there is State interference in setting up the prices of the inputs or the prices of the product itself. Market economy status should not be granted to any Chinese producers of the subject goods. The domestic industry has provided information with regard to cost of production and selling price of the subject goods in Sri Lanka and the same can be adopted for determination of normal value. Further, the domestic industry has provided information with regard to the cost of production in India and the same can be adopted for determination of normal value.
- Domestic Industry could not procure any information/evidence of the price of subject goods in the domestic market of Thailand and therefore has requested to

calculate normal value in Thailand based on estimates of cost of production, duly adjusted to include a profit margin.

- The export prices being CIF prices, while the normal values being at ex-factory level; the export prices should be adjusted for Ocean Freight, Marine Insurance, Commission, Inland Transportation in the country of export, Port handling and port charges expenses, Bank charges, etc.
- Dumping margin established at the time of previous investigations was significant. Even dumping margin during the present period of investigation remains significant. The dumping margin is not only more than de-minimis but is substantial.
- With regard to the argument that the import price has increased, an increase in CIF export price per se is insufficient to conclude that the present anti dumping duty can be allowed to cease.

Submissions made by other interested parties

25. None of the other interest parties have made any submission in respect of "dumping determination".

Normal value

26. The Authority sent questionnaires to the known exporters/ producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. In response thereto, only M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd, a producer & exporter from China PR has co-operated in this investigation by filing their questionnaires' response.

Normal value –China PR

27. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. However, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters/producers in terms of the AD Rules.

28. As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy may be rebutted, if the exporter(s) /producer(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether:

- the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

- the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

29. The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority; M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd, a Chinese producer/exporter has submitted the questionnaires' response but it has not filed its market economy questionnaire's response and thus has chosen not to rebut the non-market economy presumption. The questionnaires' response was perused, wherein it has been, *inter alia*, stated that the product under investigation produced by Zhongce was not sold in the home market but only for export.

Determination of Normal value in respect of Exporters / Producers from China PR

30. As the only co-operative exporter/producer from China PR has chosen not to rebut the non-market economy presumption and no other Chinese producer/exporter has submitted the questionnaires' responses and sought to rebut the MET presumption; the Authority has determined the Normal value in China PR on the basis of Para-7 to Annexure-I to the AD Rules.

31. Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides that

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments".

32. As the presumption of non-market economy as enshrined in para 8(2) of Annexure I of the AD Rules remains un-rebutted; the Authority has, therefore, determined the Normal value in accordance with para 7 Annexure I of the AD Rules. In absence of sufficient information on record regarding the other methods as are stipulated in para

7 of Annexure I of the AD Rules, the Authority has determined the Normal value by adopting the method "any other reasonable basis".

33. The Authority has therefore constructed the Normal value for China PR considering the international prices of major raw materials such as natural rubber and carbon black, consumption factor of most efficient domestic industry and conversion cost of most efficient domestic industry. Besides a reasonable profit margin of 5% has been adopted. The Normal value so determined works out as *** US\$/Kg.

Determination of Normal value in respect of Non-Co-operative Exporters / Producers from subject countries

34. The Authority notes that none of the exporters/producers from Thailand has responded to the exporter' questionnaire. Therefore, the Authority is constrained to construct their Normal values on the basis of 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. For this purpose, the Normal value has been, *inter alia*, determined considering intemational prices of raw material from Thailand i.e. such as natural rubber and carbon black, consumption factor of most efficient domestic industry and conversion cost of most efficient domestic industry.

Export Price

M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd.

35. The Authority notes that only one Chinese producer/exporter, namely M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd, has submitted the questionnaires' response. On a perusal of the response, it has been noted that the company has exported 575.9673 MT of the subject goods to India during the POI. The adjustments have been claimed on account of inland freight, port handling charges, credit costs, warranty claim and VAT. During the course of on-the-spot verification, it was noted that credits costs were slightly different than what was claimed. Hence, the adjustment on account of credit costs as noted during the on-the-spot verification has been adopted. As regards other adjustments, the same as verified have been accepted and are being allowed. The net export price so worked out has been determined as US\$ *** per/MT.

Non-co-operative exporters/producers

36. As no other exporter / producer from China PR and no exporter / producer from Thailand has provided any information that can be used for determination of the export price, the Authority has determined the 'Export Price' on the basis of 'facts available' on record.

H.

Dumping Margin

37. On the basis of the Normal value and Export price so determined at ex-factory level; the dumping margin during the POI for all exporters/producers from China PR has been determined as follows:

SN	Countries	Normal	Net Export	Dumping Margin	
		Value	Price	USD/Kg	(%) Range
		USD/Kg	USD/Kg	USD/Kg	
1	China PR				
	M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co.Ltd.,	***	***	***	25-35
	Others	***	***	***	30-40
2	Thailand	***	***	***	25-35

I. Likelihood of continuation or recurrence of dumping:

Submissions made by the domestic industry:

38. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- The exporters and producers from the subject countries have continued to export the material at the dumped prices even after the imposition of the anti-dumping duty. Given the dumping has consistently continued from the subject countries in the past, there is a reasonable apprehension that the revocation of duties in the present case would definitely result in intensified dumping from China PR and Thailand.
- In case of no exports of the subject goods from the subject countries in the relevant period, the Authority is required to examine whether the cessation of the anti-dumping duty in force would result in recurrence of dumping in the Indian domestic market. In the instant case, there are significant volumes of imports were reported from the China PR.
- Volume of imports between original period and subsequent periods has declined, but is still in significant volume to establish likelihood of dumping. Besides there are excess production capacities in the subject countries. In case of China, the fact that the radialisation is in rapid progress and the Government has imposed restriction on the manufacturing of subject goods for domestic market, there is excessive capacities lying with the producers of the China and Thailand. The tables below indicate the excessive capacities maintained by producers in China and Thailand.

Capacity Table –China PR

S No	Name of Company	Annual Capacity* (million)
1	Aeolus Tyre Co. Ltd. (China Haohua Chemical (Group) Corp. and Henan Tyre Corp. Ltd. joint venture)	6
2	Anhui Kaiyuan Tire Co. Ltd.	0.1
3	Beijing Capital Tyre Co. Ltd.	2

4	Cheng Shin Rubber (Xiamen) Ind. Ltd.	95
5	China Enterprises Ltd Yinechuan CSI, Yinechuan	2
6	Cooper Chengshan (Shandong) Tire Co. Ltd.	10.9
7	Cooper Kenda Tire (Kunshan) Co. Ltd. (Cooper Tire & Rubber Co. and Kenda Rubber Industrial Co. Ltd. joint venture)	5.4
8	Dong Feng Lion Tyre Co. Ltd.	3
9	GITI Tire (China) Investment Co., Ltd. Chongqing, Sichuan	63.8
10	Good Friend Tyre Co. Ltd.	1
11	Guangzhou Pearl River Rubber Tyre Ltd.	1
12	Guilin Tire Co.	1
13	Guizhou Tyre Co. Ltd.	3
14	Hangzhou Zhongce Rubber Co. Ltd.	30
15	Hebei Starbright Co. Ltd. (Maine Industrial Tire L.L.C.)	0.047
16	Hwa Fong Rubber (China) Co. Ltd. (Hwa Fong Rubber Industry Co. Ltd.)	\$4.75
17	Kenda Rubber (China) Co. Ltd. (Kenda Rubber Industrial Co. Ltd.)	70
18	Longkou Xinglong Tire Co. Ltd.	0.5
19	Qingdao Doublestar Tire Industrial Co. Ltd.	6
20	Qingdao Hengda Tire Co. Ltd.	0.6
21	Qingdao Qizhou Rubber Co. Ltd.	0.3
22	Qingdao Tengjiang Tyre Co. Ltd.	1
23	Shandong Linglong Rubber Co. Ltd.	21
24	Shandong LuHe Group General Co.	9
25	Shandong Shengtai Tyre Co. Ltd.	3
26	Shandong Zhongce Tyre Co. Ltd.	1
27	Triangle Group Co. Ltd.	4
28	Wendeng Sanfeng Tyre Co. Ltd.	1
29	Xiamen Rubber Factory	0.8
30	Xinjiang Kunlun Tire Co. Ltd.	1
31	Xuzhou Xugong Tyre Co. Ltd.	3.5
32	Yunnan Tire Co.	0.73
33	Total Capacity	402.427

*Source Global Tyre Report from European Rubber Journal produced in December 2011

Capacity Table -Thailand

S No	Name of Company	Annual Capacity* (million)
1	Deestone Ltd.	0.02
2	Goodyear Thailand Ltd. (Goodyear)	2.50
3	Michelin Siam Group Co. Ltd. (Group Michelin)	

4	Nongkhae, Saraburi	1.60
5	Phrapadaeng, Sarnuthprakarn	5.40
6	Otani Tire Co. Ltd	0.50
7	Siam Rubber Ltd.	5.40
8	Thai Bridgestone Co. Ltd. (Bridgestone Corp.)	
9	Ransit, Pathumthani	1.70
10	Vee Rubber Corp. Ltd. & Subsidiary Co.	17.00
11	Total Capacity	34.12

*Source Global Tyre Report from European Rubber Journal produced in December 2011

- Considering the known capacities available, the Indian demand can be easily met entirely by dumped imports. Once the anti dumping duty is revoked there is a strong likelihood that the entire Indian demand may be catered by the producers of the subject countries. There is continued dumping from the producers and exporters from subject countries, which would become more aggressive once the duty in force expires. The intensity of dumping is likely to at best increase in the event of revocation of anti dumping duties. Thus, dumping is likely to continue at increased level in the event of revocation of anti dumping duties.

Submissions made by M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd

39. M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd, in brief, has contended as follows:

- The claim of the domestic industry regarding the unutilized capacities is not substantiated by the domestic industry. There are no surplus capacities with the exporter.

Examination by the Authority

40. In terms of relevant provisions, the following aspects need to be examined in a Sunset review investigation:

- Whether the dumping is continuing; and if so, whether it is likely to continue in the event of cessation of anti dumping duties;
- In case where dumping did not continue, whether the dumping would recur in the event of cessation of anti dumping duties;

41. The AD Rules do not prescribe any specific methodology to examine the likelihood of dumping in a Sunset review investigation. However, in case there is a significantly positive dumping margin in respect of exports of the subject goods during the POI; then it is likely that dumping would continue in case of cessation of anti-dumping duty in force, unless the facts state otherwise. However, in case there have been no exports of the subject goods during the POI; then it would not mean that there is no likelihood of recurrence of dumping in case of cessation of anti-dumping duty in force. In such cases, other relevant factors are required to be examined, for instance, evidence, if any, regarding propensity for dumping, that may be determined by considering the exports of the subject goods in third country markets.

42. In the instant matter, the subject goods have been imported from the subject countries during the period of investigation albeit in lower volumes but the imports are significant. It is further noted that the subject goods have been exported at dumped prices and are significantly undercutting and underselling the prices of the domestic industry. In case, the anti-dumping duties are allowed to expire, the volume of the subject goods at dumped prices is likely to increase. This view is further buttressed, considering the un-utilized capacities to produce the subject goods in the subject countries.

43. In view of the above, the Authority notes that the subject goods are likely to continue to be dumped, if the present anti dumping duties is allowed to cease. Besides, cessation of the anti-dumping duty is likely to lead to increased volumes of imports of the subject goods from the subject countries at dumped prices.

J.

Injury

Submissions made by interested parties and the Examination thereof

M/s Hangzhou Zhongee Rubber Co.Ltd., China PR

44. M/s Hangzhou Zhongee Rubber Co. Ltd., China PR, in brief, has submitted as follows:

- There has been increase in the cost of sales due to the unprecedented increase in the prices of the raw material prices.
- There has been consistent increase in the Indian production as also the sales during the period 2007-08 to POI with most manufacturer having a capacity utilisation in excess of 92% during the POI is conclusively evidentiary that there is no causal link between the imports from China with the injury.
- The domestic industry has sought for returns on investments to the tune of 22% for the calculations of NIP. The industry is highly competitive and the rate of return of top German Tyres manufacturer and world's fourth largest tyre manufacturing company is around 11%. Therefore a comparable rate of return of not more than 10% - 11% should be considered while calculating NIP for the domestic industry
- Reduction in profits and excess earnings which is termed as injury by the domestic industry may have been caused on account of the following factors:
 - Fluctuations in the raw material prices
 - Inability of the industry to pass on the increase in raw material prices to the consumer due to stiff competition.
 - Creation of excess capacities in bias segment (due to shift to radialisation) leading to low efficiency among the domestic industry.
- Causal Link: The behaviour of the profitability of the domestic industry is independent of the volume/price of imports. The profitability of the imports has gone down even though; the volume of the imports has gone down.

Submissions made by AITDF

- The Indian Rupee in comparison to Dollar currency has been getting depreciated to the extent of 25% and has further put restriction on import of truck / bus bias ply nylon fabric tyres and the rate of return on capital by the domestic tyre majors involved in the case is much healthier in comparison to global standards, therefore, the Authority should review its earlier decision and abolish anti-dumping duty on import of said product. There is urgent need to check inflation in the economy by reducing the road transport cost wherein the tyres cost 35% of the variable cost of a truck owner. In last one year, the natural rubber price has come down to Rs. 192/- per kg from the peak of Rs. 240/- per kg i.e. a decline of over 20% and the raw material prices of petro product based inputs, which go into the manufacture of tyre, are prevailing below the average of year 2008. These inputs include synthetic rubber, nylon tyre cord fabric, carbon black, rubber chemicals etc.

Submissions made on behalf of the domestic industry

45. The domestic industry, in brief, has submitted as follows:

- The two elaborate investigations conducted by the Designated Authority clearly establish that the domestic industry has suffered material injury as a result of dumping. These previous findings should be considered with regard to injury to the domestic industry in the current period.
- The demand of bias tyres in India has not diminished due to radialisation. The level of radialisation in India and China are at different levels. There is significant demand of bias tyres in India.
- Imports of product under consideration have declined after imposition of anti dumping duties. However, volume of imports is still quite significant to establish the likely prices and to show the likelihood of dumping and injury in the event of cessation of anti dumping duties. Volume of imports is low but it is significant for likelihood analysis.
- Weighted average import prices (after including basic customs duties) are significantly below the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting.
- Landed price of Chinese import is well below cost of production and non injurious price of the domestic industry.
- The price at which the domestic industry is selling the product in the market is below the non injurious price of the domestic industry. The domestic industry is therefore already underselling the product. Should the present duties be revoked, the domestic industry would be faced with further underselling the product.
- With regard to performance of the domestic industry in terms of the economic parameters, while production and domestic sales have slightly declined in the current year as compared to the previous year.
- The increase in cost of sales is due to the universal increase in prices of the raw materials.
- Profits of the domestic industry improved till 2009-10. The same however declined in current year. Return on investment and cash profits have followed the same trend as that of profitability.
- Inventories with the domestic industry have increased.

- The participating companies are a multi-product company and therefore employment level and wages may not depict a clear impact (adverse impact) of dumping of subject goods on domestic industry.
- Productivity of the domestic industry improved. However, considering the rate of present situation and latest performance of the domestic industry, domestic industry would not be able to maintain its productivity, should the dumped imports be allowed to continue at the current prices.
- The improvement in the injury parameters is a result of imposition of anti-dumping duty. However, if the duty is revoked the volume of imports is likely to once again increase.
- The rate of return on investment earned by foreign producers cannot and should not be compared with return on investment required by domestic industry in view of vastly different level of economic development.
- The circumstances prevailing in the year 2008-2009 were affected by the global recession. The automobiles market saw an unprecedented and unexpected growth in 2009-10.
- The dollar appreciation is not selectively impacting the imports of tyres in India. The same is impacting the raw materials and other costs as well. Thus, changes in the exchange rates are impacting both the domestic industry and the imports in the same direction.
- Imports from the subject countries are likely to cause significant price undercutting in the event of expiry of anti dumping duties.
- Existence of significant price undercutting in the event of expiry of anti dumping duty is likely to result in consumers switching over to the imported material, given that the product is highly price competitive.
- The duty paid import price from the subject countries would be much lower as compared with the prices of the domestic industry. Since the imports would undercut the prices of the domestic industry, there would be likely demand for the imported product.
- In case the duty is allowed to cease and consequently the imports from the subject countries increase, the Domestic Industry would be forced to reduce the prices of the product concerned significantly. Should the Domestic Industry be forced to reduce the prices, its natural impact would be on the profitability of the Domestic Industry. Decline in profits would lead to decline in cash flow and return on investment. In a situation where the exporters in the subject countries maintain significant excess capacities, it follows that the volumes would at best increase with the cessation of the anti-dumping duty. Should the Domestic Industry prefer to lose sales volumes, it would spell much bigger injury, as decline in sales volume would result in increase in inventories level; decline in production, capacity utilization, and productivity.
- With regard to the argument that the petition does not contain information on cash profits, the domestic industry submits that relevant information to determine cash profits is contained in the petition.
- The exporters and producers from the subject countries have continued to export the material at the dumped prices even after the imposition of the anti-dumping duty. There is a reasonable apprehension that the revocation of duties in the present case would definitely result in intensified dumping from China PR and Thailand.

- There is likelihood of recurrence of dumping (a) in a situation where exports to third countries are at dumping prices, (b) such export prices are comparable to the export price to India; (c) landed price of imports considering such prices are significantly below the (i) selling price, (ii) non injurious price, (iii) cost of production of the Domestic Industry, it must be held that the producers in these countries would resort to dumping the material in Indian market and the same would cause injury to the domestic industry, should the present anti dumping duties be revoked.
- The situation of the Domestic Industry is already fragile. It is expected that the condition of the Domestic Industry would improve under the discipline of the anti-dumping duty imposed.
- In a situation where there is no continued injury to the Domestic Industry, it is mandatory for the Designated Authority to examine the likelihood of injury to the Domestic Industry in the event of expiry of the anti-dumping duty in force.
- Domestic Industry has provided the information relating to exports of the subject goods from the subject countries to various other countries. The producers and exporters from the subject countries are exporting the subject goods at dumping prices in other countries' markets.
- The price at which the subject goods are being sold by the Domestic Industry is higher than the price at which material is being exported from the subject countries to a number of other countries.
- Excessive Production Capacities and export orientation maintained by the Subject Countries:- In case of China, the fact that the radialisation is in rapid progress and the Government has imposed restriction on the manufacturing of subject goods for domestic market, there is excessive capacities lying with the producers of the China. The producers have annual capacities ranging from 1-6.5 million. The export orientation of Chinese producers ranges from 30-100%.

Examination by the Authority

46. The submissions made by the interested parties have been examined as follows:

- The Authority notes that the costs of sales due to the increase in the prices of the raw material prices have been duly considered while undertaking the injury analysis.
- As regards increase in the Indian production as also the sales and better capacity utilisation of most domestic producers is concerned; the Authority notes that the same is expected to improve due to the imposition of the anti-dumping duty. It is further noted that anti-dumping duty was suitably modified to redress injury caused to the domestic industry on the account of dumping.
- As regards the issue of return on investments to the tune of 22% is concerned; the Authority has determined the same in terms of the relevant rules & regulations and as per its consistent practice.
- As regards the issue that injury by the domestic industry may have been caused on account of fluctuations in the raw material prices; inability of the industry to pass

on the increase in raw material prices to the consumer due to stiff competition and creation of excess capacities in the bias segment (due to shift to radialisation) leading to low efficiency among the domestic industry etc; the Authority notes that there is a significant price undercutting and price underselling and the presence of dumped imports has apparently not allowed the domestic producers to realise a better selling price despite increase in the input prices.

- As regards the contention that the behaviour of the profitability of the domestic industry is independent of the volume/price of imports and that the profitability of the domestic industry has gone down even though the volume of the imports has gone down; the Authority concurs with the facts stated by the interested party but differs from the analysis thereof as the domestic producers have suffered injury on account of price factors, which in turn has been impacted by the presence of dumped imports in the Indian market. As long as there are significant volumes of dumped imports present in the market, the same are likely to adversely impact the domestic industry.
- As regards the issue that the Indian Rupee's depreciating *vis a vis* US \$; it has been a general practice of the Authority to consider the relevant data of the POI.
- As regards the issue of the prices of natural rubber having come down; the Authority has taken into cognizance the relevant factors while undertaking its analysis.

47. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the submissions made by the interested parties as follows:

48. Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

49. For the purpose of current injury analysis the Authority has examined the volume and prices effects of imports of the subject goods from the subject countries on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between dumping and injury, if any.

Cumulative assessment

50. Annexure II para (iii) of the AD Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations,

the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:-

- a. the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively accounts for more than seven percent of the import of like article and
- b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

51. The Authority notes that:-

- The subject goods are being dumped into India from China PR and Thailand.
- The margins of dumping from each of the subject countries are more than the *de-minimis* limits prescribed;
- The volume of imports from each of the subject countries is more than the negligible limits prescribed;
- Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate as the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market, which is evident from the following:-

 - a. The products manufactured by the producers from the subject countries and the products manufactured by the Applicant have comparable properties. In other words, goods supplied by various subject countries and by the domestic industry are *inter-se* like articles.
 - b. There are common parties who are resorting to use of the imported subject goods from various sources and the goods produced by the domestic industry. Both, the imported and the domestic subject goods, are being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported products and *inter-se* amongst imported products.
 - c. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the product in the same periods to the same set of customers. The sales channels are comparable.
 - d. The volume of imports from each of the subject countries is significant.

52. In view of the above, the Authority considers that it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries.

Volume Effect
Assessment of Demand

53. The consumption of the subject goods in India may be defined as the sum of domestic sales of Indian producers and imports from all countries. The details in this regard are as follows:

SN	Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Assessed Demand	MT	604,619	598,820	705,625	659,114
2	China PR	MT	10,770	7,644	4,232	2,171
3	Thailand	MT	36	11	15	220
4	Subject Countries	MT	10,805	7,656	4,248	2,391
5	Other Countries	MT	1,962	871	1,003	1,168
6	Sales of Domestic Industry	MT	499,477	486,036	549,634	526,854
7	Sales of supporting domestic producer	MT	67,356	86,158	132,583	86,907
8	Other Indian Producers	MT	25,018	18,101	18,157	41,794

The Authority notes that the demand of the product in the country has shown positive trend throughout the injury period except during 2008-09 as compared to the base financial year. The sales of the domestic industry have increased during the POI as compared to the base year but have declined as compared to the previous year. The growth in demand during period of investigation over the base year was about 9.01 %.

Import Volume and Market Share

54. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. In this regard, Annexure II (ii) of the AD Rules provides as under:

"While examining the volume of dumped imports the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India"

55. The details regarding imports and market share is indicated in the table given below.

Sr. No	Particulars	Units	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Imports	MT	12,767	8,526	5,250	3,559
2	China PR	MT	10,770	7,644	4,232	2,171
3	Thailand	MT	36	11	15	220
4	Subject Countries	MT	10,805	7,656	4,248	2,391
5	Other Countries	MT	1,962	871	1,003	1,168

Sr. No.	Market share in Imports	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1.	China PR	%	84.35	89.66	80.61	60.99
2.	Thailand	%	0.28	0.13	0.29	6.18
3.	Other Countries	%	15.37	10.21	19.10	32.83

The Authority notes that the volume of imports of product under consideration from China PR have declined throughout the injury period; whereas the same have increased from Thailand during the POI as compared to the base year. It is noted that while the volume of imports of the subject goods have declined during the injury period, the same is at dumped prices and remains significant enough to impact the prices of the domestic industry.

Price Effect

Price Undercutting

56. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports when compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The following table below indicates the Net Selling price of the domestic industry, Landed price of the imports and the price undercutting.

China PR

Sl. No	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
--------	-------------	------	---------	---------	---------	-----

1	Volume	MT	10,770	7,644	4,232	2,171
2	Value	Rs. Lacs	9,243	7,600	4,531	2,386
3	Export Price	Rs./ Kg	85.82	99.42	107.06	109.89
4	Landing Charges	Rs/Kg	0.86	0.99	1.07	1.10
5	Assessable Value	Rs/Kg	86.68	100.42	108.13	110.99
6	Customs Duty %	%	12.5	10	10	10
7	Customs Duty Amount	Rs/Kg	10.84	10.04	10.81	11.10
8	Cess @ 3 %	Rs/Kg	0.33	0.30	0.32	0.33
9	Landed Value	Rs/Kg	97.84	110.76	119.27	122.43
10	NSR of the Domestic industry	Rs/Kg	***	***	***	***
11	Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
12	Price Undercutting %	% Range	20-30	20-30	15-25	25-35

Thailand

S No	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Volume	MT	36	11	15	220
2	Value	Rs. Lacs	33	18	20	277

3	Export Price	Rs. Kg	91.14	156.26	131.74	125.96
4	Landing Charges	Rs/Kg	0.91	1.56	1.32	1.26
5	Assessable Value	Rs/Kg	92.05	157.83	133.06	127.22
6	Customs Duty %	%	12.5	10	10	10
7	Customs Duty Amount	Rs/Kg	11.51	15.78	13.31	12.72
8	Cess @ 3 %	Rs/Kg	0.35	0.47	0.40	0.38
9	Landed Value	Rs/Kg	103.91	174.08	146.76	140.33
10	NSR of the Domestic industry	Rs/Kg	***	***	***	***
11	Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
12	Price Undercutting %	% Range	15-25	(15-25)	0-10	15-25

Subject countries

S No	Particulars	Unit	POI
1	Volume	MT	2391
2	Value	Rs. Lacs	2663
3	Export Price	Rs. Kg	111.37
4	Landing Charges	Rs/Kg	1.11
5	Assessable Value	Rs/Kg	112.49
6	Customs Duty %	%	10

7	Customs Duty Amount	Rs/Kg	11.25
8	Cess @ 3 %	Rs/Kg	0.34
9	Landed Value	Rs/Kg	124.07
10	NSR of the Domestic industry	Rs/Kg	***
11	Price Undercutting	Rs/Kg	***
12	Price Undercutting %	% Range	25-35

The Authority notes from the above tables that the landed value of the import from the subject countries have been significantly below the net sales realization of the domestic industry resulting in significant price undercutting.

Price Underselling

57. The following table below indicates the Non Injury price of the domestic industry, Landed price of the imports and the price underselling.

SN	Particulars	Unit	China PR	Thailand	Subject countries
1	Volume	MT	2.171	220	2391
2	Value	Rs. Lacs	2.386	277	2663
3	Export Price	Rs. Kg	109.89	125.96	111.37
4	Landing Charges	Rs/Kg	1.10	1.26	1.11
5	Assessable Value	Rs/Kg	110.99	127.22	112.49
6	Customs Duty %	%	10	10	10
7	Customs Duty Amount	Rs/Kg	11.10	12.72	11.25
8	Cess @ 3 %	Rs/Kg	0.33	0.38	0.34
9	Landed Value	Rs/Kg	122.43	140.33	124.07
10	NIP of the Domestic industry	Rs/Kg	***	***	***
11	Price Underselling	Rs/Kg	***	***	***

12	Price Underselling %	% Range	25-35	15-25	25-35
----	----------------------	---------	-------	-------	-------

58. From the above tables, it is seen that the Landed price of the subject goods into India from China PR and Thailand has been lower than the NIP determined for the domestic industry resulting in price underselling.

Economic Parameters affecting Domestic Industry

59. As per Annexure II to the AD Rules, the Authority is required to examine the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, which includes an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity, factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry have been analyzed as follows:

Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

60. The performance of the domestic industry in respect of capacity, production, capacity utilization and sales has been stated in the table below:

SN	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Capacity	MT	594,086	616,481	640,573	642,764
2	Production	MT	558,836	527,355	574,754	571,051
3	Capacity Utilization	%	94.07	85.54	89.72	88.84
4	Domestic sales	MT	499,477	486,036	549,634	526,854

The Authority notes that-

- i. Production of domestic industry during the POI has increased as compared to the base year and has marginally decreased as compared to the previous year.
- ii. Capacity utilization during the POI has declined as compared to the base year as well as the previous year but this is apparently due to shift in the usage of the capacity due to changes in the product mix.
- iii. Domestic sales have shown the same trend as production. The domestic industry has been able to improve its sales volumes after imposition of anti dumping duties. The domestic industry has, *inter alia*, contended that the sales could have increased further, but for continued dumping has prevented growth in production, capacity utilisation and sales volumes.

Profit/Loss, Cash Flow, Return on Capital Employed

61. Information with regards to profits, selling price, return on capital employed of the domestic industry is as follows:

Indexed Figures

SN	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Profit/Loss	Rs lacs	100	26	126	(10)
2	Cash Profit	Rs lacs	100	37	125	9
3	Return on Capital Employed	%	100	43	115	13

62. The Authority notes that the profitability of the domestic industry dipped in 2008-09, as the anti-dumping duty apparently was not effective. It improved significantly in 2009-10, but declined sharply and became negative in the POI. The Return on Capital employed and Cash profits show the same trend as that of profits.

63. The Authority has examined profitability by considering the trends in the cost of sales and selling prices over the injury period as per the table below. It is seen that while the cost of sales and the selling prices have increased over the injury period. The increase in the selling prices till 2009-10 as compared to the base year was somewhat similar on prorate basis as the increase in the cost of sales. However, the increase in the cost of sales during the POI was far higher than the increase in the selling prices during the POI as compared to the base year. Consequently, profitability of the domestic industry suffered during the POI.

Indexed Figures

S No	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI

1	Cost of sales	Rs/Kg	100	119	113	147
2	Sales Value	Rs/Kg	100	111	113	134
3	Profit/Loss	Rs/Kg	100	26	115	(10)

Inventories

64. The following table below gives the details of inventory of the domestic industry during the injury period.

SN	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Opening Stock	MT	28,758	33,731	34,590	25,071
2	Closing stock	MT	33,731	34,590	25,071	41,297
3	Average Stock	MT	31,244	34,160	29,831	33,184

The Authority notes that though the inventories of the domestic industry were expected to decline with the imposition of anti dumping duties but the inventories have increased during the POI as compared to the base year.

Employment and Wages

65. The following table shows the details of employment and wages of the domestic industry during the injury period.

Indexed Figures

SN	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Employment	No	100	98	101	103
2	Wages	Rs lacs	100	107	119	131

66. The Authority notes that the employment and wages have shown positive trends. The Authority further notes that since the participating companies are multi-product

companies, these parameters may not depict a clear impact of imports of the subject goods on employment and wages.

Productivity

67. The Authority notes that productivity per day of the domestic industry has increased during the POI as compared to the base year as well as the previous year. However, productivity per employee remains almost same through the injury period.

SN	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Growth	1 Productivity per day	MT	1,705	1,591	1,723	1,737
	2 Productivity per Employee	MT (Indexed)	100	95	100	99

68. The Authority notes that the growth of the domestic industry was positive till 2009-10. However, growth became negative in the POI in terms of profits, cash profits and return on investment show adverse trend during the POI.

Magnitude of Dumping Margin

69. The Authority notes that dumping margins during the period of investigation remain significant. Dumping margins are not only more than *de-minimis* but are significant.

Conclusion on Injury

70. Thus, the Authority notes that the various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury. While volume parameters like capacity, production and sales have decreased in comparison to immediate previous year and increased in absolute terms in comparison to base year, but the same have not increased corresponding to the increase in demand of the subject goods in India. More importantly, profitability of the domestic industry has deteriorated in the POI, apparently due to continued dumped imports. It can thus be concluded that the domestic suffered material injury.

Likelihood of Continuation or Recurrence of Injury

71. M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co. Ltd, in brief, has contended that:

- Coupled with the growing trends in the profitability of the domestic industry, the insignificant imports do neither cause any material injury or even have any likelihood of causing any material injury in the future to the domestic industry and Indian producers.

- A factual determination of NIP would lead to the fact that there exists no injury to the domestic industry and a negligible import volume cannot cause any likely injury to the domestic industry.
- The claim of the domestic industry regarding the unutilized capacities is not substantiated by the domestic industry. There are no surplus capacities with the exporter.
- In the anti dumping investigation concerning imports of Acrylic Fiber, the duty was discontinued because the Authority did not find any likelihood of recurrence of injury to the domestic industry.

Submissions made by the domestic industry

72. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

The likelihood of continuation or recurrence of dumping and consequent injury can be examined by considering the following parameters.

- a) Likelihood of continuation of dumping: The exporters and producers from the subject countries have continued to export the material at the dumped prices even after the imposition of the anti-dumping duty. Given the dumping has consistently continued from the subject countries in the past, there is a reasonable apprehension that the revocation of duties in the present case would definitely result in intensified dumping from China PR and Thailand.
- b) Likelihood of recurrence of dumping: An examination of the possibility of dumping in respect of third country exports particularly when there have been no exports or low volume of exports to India in the current period is also practiced by other investigating authorities. The domestic industry has contended that (a) in a situation where exports to third countries are at dumped prices, (b) such export prices are comparable to the export price to India; (c) landed price of imports considering such prices are significantly below the (i) selling price, (ii) non injurious price, (iii) cost of production of the domestic industry, it must be held that the producers in these countries would resort to dumping the material in Indian market and the same would cause injury to the domestic industry, should the present anti dumping duties be revoked.
- c) Likelihood of continuation of Injury: Situation of the domestic industry is already fragile. It is expected that the condition of the domestic industry would improve under the discipline of the anti-dumping duty imposed.
- d) Likelihood of recurrence of injury: In a situation where there is no continued injury to the domestic industry, it is mandatory for the Authority to examine the likelihood of injury to the domestic industry in the event of expiry of the anti-dumping duty in force.
- e) Level of current dumping margin: Dumping margin continues to be significant. In the previously concluded investigations also, the Authority found significant dumping margins and concluded the investigation with the continued imposition of anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the subject countries.

- f) The producers and exporters from the subject countries are exporting the subject goods at dumping prices in other countries' markets.
- g) The price at which the subject goods are being sold by the domestic industry is higher than the price at which material is being exported from the subject countries to a number of other countries.
- h) The subject countries hold excessive capacities for producing the subject goods. The same can be marked on the basis of the volume of exports maintained by the subject countries. In case of China PR, the fact that the radialisation is in rapid progress and the Government has imposed restriction on the manufacturing of the subject goods for domestic market, there are excessive capacities lying with the producers of the China PR and Thailand.

Sl. No.	Total Capacity	Annual Capacity (million in Pieces)
1.	China PR	402.43
2.	Thailand	34.12

- i) The export orientation of Chinese producers ranges from 30% to 100%.
- j) Given the performance of the domestic industry during the current period (the situation of the domestic industry is already fragile), it is evident that any low priced significant imports shall lead to significant injury to the domestic industry. The likely profitability, return on investment and cash flow situation of the domestic industry in the event of revocation of anti dumping duties is referred to and relied upon, which clearly shows that the domestic industry shall suffer significant financial losses, negative return on investment and negative cash flow.
- k) Imports from the subject countries are significantly undercutting the prices of the domestic industry. Should the present anti-dumping duties be withdrawn, the imports would become extremely lucrative and would increase the demand for imports.
- l) It has been further contended that now with significant demand and imports, the domestic industry is left with the following option which is as follows:

If the domestic industry matches NSR with landed price: the analysis below shows the impact on domestic industry if it sells at a price equal to landed price:

* Indexed Figure

S No.	Particulars	Unit	POI(Current)	POI
1	Landed Price of Imports	Rs/Kg	124	124

	2 Cost of Sales	Rs/Kg	***	***
	3 Selling Price	Rs/Kg	***	124
	4 Current profit/loss	Rs/Kg*	(100)	(5,061)
	5 Profit before interest and tax on domestic sales	Rs Lacs*	100	(2,324)
	6 Return on capital employed on domestic sales	%*	100	(2,324)
	7 Cash profit on domestic sales	Rs/MT*	100	(5,033)

It has been contended by the domestic industry that if it matches its prices with that of landed price; its profitability would reduce significantly. Besides, there would be significant decline in its cash profits and return on investment.

Domestic industry maintain its selling price: Cessation of Anti-dumping duty would likely to lead to further increase in imports with intensified dumping. If domestic industry maintains its prices, the consumers would shift to Chinese goods as they being cheaper. This would lead to deterioration in the market share of the domestic industry and consequently sales, production and capacity utilization would decline leading to injury to the domestic industry.

The likely impact can be seen from below:

S No.	Particulars	Unit	POI(Current)	POI*
1	Market share			
A	Domestic industry	%	79.93	0.00
B	Imports from subject countries	%	0.36	100.00
2	Sales Volume of Domestic industry	MT	526,854	-
3	Production of Domestic industry	MT	571,051	-

It would thus be seen that there is a likelihood of dumping and injury in the event of cessation of Anti-dumping duty in force.

Examination by the Authority

73. As has been noted above, the profitability of the domestic industry has become negative, which is apparently due to the presence of the dumped imports (though in lower

volumes but the volumes remain significant) in the Indian market. It has not been able to pass on the increase in the costs to make and sell the subject goods, which it would have been able to do in the absence of dumped imports. Thus, the domestic industry has continued to suffer material injury. Therefore, any cessation of the duty is likely to lead to not only continuation of the 'injury' but to worsening performance of the domestic industry in respect of the subject goods.

K. CAUSAL LINK

Submissions made by the interested parties

74. M/s Hangzhou Zongee Rubber Co. Ltd has contended that the behaviour of the profitability of the domestic industry is independent of the volume/price of imports. The profitability of the imports has gone down even though; the volume of the imports has gone down.

Submissions made by the domestic industry

75. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- The causal link has already been established in the earlier investigations. In the present review investigations, the Authority has to examine whether revocation of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Thus, an examination of whether cessation of anti dumping duties would lead to continuation or recurrence of injury involves such an analysis that a positive finding would be recorded only if cessation of anti dumping duties would lead to continuation or recurrence of injury. A positive finding of injury would be recorded only in case there is a relationship between cessation of anti dumping duties and recurrence or continuation of injury. None of the 'other factors' as mentioned in the above referred provision have caused injury to the Domestic Industry.
- The domestic industry has further contended that once it is shown that:
 - a) there is a volume and price effect from dumped imports under paragraph (ii) of Annexure II,
 - b) the effects of injury caused by dumped imports are demonstrated in terms of the parameters set out in paragraph (iv) of Annexure II.

Then, the only basis on which to conclude that the injury is not caused by the dumped imports are through non-attribution analysis, i.e., those other factors have caused the injury. As demonstrated in the preceding paragraphs, listed known other factors do not establish that injury has been caused by these other factors. Such being the case, the only inescapable conclusion is that the injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject country.

- The domestic industry further submitted that the following parameters show causal link: -
 - a. Imports from the subject countries are likely to cause significant price undercutting in the event of expiry of anti dumping duties.
 - b. Existence of significant price undercutting in the event of expiry of anti dumping duty is likely to result in consumers switching over to the imported material, given that the product is highly price competitive.
 - c. The duty paid import price from the subject countries would be much lower as compared with the prices of the domestic industry. Since the imports would undercut the prices of the domestic industry, there would be likely demand for the imported product.
 - d. In case the duty is allowed to ceased and consequently the imports from the subject countries increase, the Domestic Industry would be forced to reduce the prices of the product concerned significantly.
 - e. Should the Domestic Industry be forced to reduce the prices, its natural impact would be on the profitability of the Domestic Industry. Decline in profits would lead to decline in cash flow and return on investment.
 - f. Should the Domestic Industry choose to maintain its normal price levels, it is likely to lose its sales volume, as consumers would increasingly switch over to the imports.
 - g. In a situation where the exporters in the subject countries maintain significant excess capacities, it follows that the volumes would at best increase with the cessation of the anti-dumping duty.
 - h. Should the Domestic Industry prefer to lose sales volumes, it would spell much bigger injury. As decline in sales volume would result in increase in inventories level; decline in production, capacity utilization, and productivity.

Examination by the Authority

76. The Authority has examined the submissions with regard to the significance and relevance of causal link in a Sunset review investigation. It is important to note under Section 9A(5), the Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury and the need for continuation of duties irrespective of whether there have been any imports of the product under consideration during the review investigation period or not. Notwithstanding this, it was examined whether other parameters listed under the AD Rules have caused injury to the Domestic Industry.

- A. Volume and value of imports not sold at dumping prices:** - It is noted that the imports of the subject goods from other countries are significantly at higher prices *vis a vis* the imports from the subject countries.
- B. Contraction in demand:** - The Authority notes that the demand of the product in the country has shown positive trend throughout the injury period except during 2008-09 as compared to the base year. Hence, contraction in demand is

not a possible reason, which could have contributed to the 'injury' to the domestic industry.

- C. Changes in the patterns of consumption:** - There is no information available on record to suggest that the pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change.
- D. Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:** - There is no information available on record suggesting that trade restrictive practice could have contributed to the injury to the domestic industry.
- E. Developments in technology:** - As per information available on record, technology for production of the subject goods has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of 'injury'.
- F. Export performance:** - The Applicant companies export the product under consideration. However, information relating to domestic sales only has been taken into consideration for assessment of injury to the extent possible.
- G. Productivity:** - It is noted that the productivity of the domestic industry has declined.

Magnitude of Injury and Injury margin:-

77. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from for determination of injury margin during the POI. Thus compared, the injury margin is worked out as under:

S No	Countries	NIP	Landed Value		Injury Margin	
			USD/Kg	USD/Kg	USD/Kg	(%) Range
1	China PR					
	M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co.Ltd.,	***	***	***	25-35	
	Others	***	***	***	30-40	
2	Thailand	***	***	***	15-25	

H. CONCLUSIONS

78. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of continuation of dumping and consequent injury and likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that: the subject goods are entering the Indian market from the subject countries at dumped prices and dumping margins are significant. It is also seen that the subject goods continue to be exported to India at dumped prices inspite of the existing anti-dumping duty. It is further noted that the price undercutting and price underselling are significant. Should the domestic industry attempt to match the same, it would have a significant adverse impact on the price parameters. Alternatively, it would have injury on volume parameters. Hence, injury to the domestic industry is likely to continue and its situation is likely to worsen in case the present anti-dumping duty is allowed to cease. Therefore, as per information available on record, the anti-dumping duty is required to be extended and modified.

I. RECOMMENDATIONS

79. Having concluded that the subject goods continue to be exported at dumped prices, the current dumping margins and injury margins establish the need for revision in the anti-dumping duty in force, the situation of the domestic industry continues to be vulnerable and there is likelihood of continuation of dumping and injury on account of imports from the subject countries, if the duties are revoked. Therefore, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended and the quantum of Anti-dumping duty is required to be modified in respect of imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries as specified in the duty table below. For the purpose of determining injury, the landed value of the imports is compared with the non-injurious price of the domestic industry determined for the period of investigation.
80. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed concerning all imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government.

Duty Table

Sl. No	Heading / Subheadings	Description of goods	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	40112090, 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal	Thailand	Thailand	Any	Any	0.86	Kg	US \$

		'rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'							
2.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	Thailand	Any country other than Thailand	Any	Any	0.86	Kg	US \$
3	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	Any country other than countries attracting Anti-dumping duty	Thailand	Any	Any	0.86	Kg	US \$
4.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	China PR	China PR	M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd.	M/s Hangzhou Zhongce Rubber Co., Ltd.	1.12	Kg	US \$
5.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or	China PR	China PR	Any, except as in Sr. no 4 above	Any	1.31	Kg	US \$

		flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'							
6.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	China PR	China PR	Any	Any, except as in Sr. no 4 above	1.31	Kg	US \$
7.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	China PR	China PR	Any	Any	1.31	Kg	US \$
6.	40112090 , 40131020 and 40129049	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	1.31	Kg	US \$
7.	40112090 , 40131020 and	'new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps	Any country other than	China PR	Any	Any	1.31	Kg	US \$

40129049	with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks'	countries attracting Anti-dumping duty						
----------	--	--	--	--	--	--	--	--

81. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

82. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority